चतुर्थ अध्यायः

"विवेच्य कहानियों का तात्त्विक विवेचन ।"

*****

चतुर्थ अध्याय: – ''विवेच्य कहानियों का तात्त्विक विवेचन''

प्रस्तावना

'कहानी' अन्य विधाओं की तुलना में कथात्मक विधाओं में सर्वाधिक रमणीय एवं बहुचर्चित, लोकप्रिय मानी गई हैं। कहानी में मानव जीवन की किसी एक घटना, प्रसंग को लेकर कलात्मक ढ़ंग से प्रस्तुत करने के कारण इसमें रमना सहज और स्वाभाविक है। डॉ. रामेश्वरलाल खंड़ेलवाल के अनुसार - ''आधुनिक कहानी केवल एक अनुभूति, चरित्र का एक पक्ष, एक भावना, एक संवेदना , जीवन की एक छोटीसी घटना, चित्र, स्थिति या झलक को लेकर चलती है। इस 'एक' को छोटी से छोटी सीमा में अधिक से अधिक प्रभावोत्पत्ति की दृष्टि से, सूक्ष्म तूलिका-कौशल के द्वारा प्रस्तुत करना ही कहानी कला का प्राण है।'' १ जिससे कहानी लोकप्रिय बन गई है।

डॉ. माधव सोनटक्के ने कहानी के निम्नलिखित तत्त्व स्वीकार किए हैं, जिन्हें अधिकांश विद्वानों ने स्वीकार किए हैं।

1. ''कथावस्तु,
2. चरित्र-चित्रण,
3. कथोपकथन या संवाद,
4. देशकाल वातावरण,
5. भाषा-शैली, और
6. उद्देश।'' २

वर्ष २००३ की, 'नया ज्ञानोदय' में प्रकाशित कहानियों का तात्त्विक विवेचन विद्वानों द्वारा स्वीकृत कहानी के तत्त्वों के आधारपर निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. कथावस्तु
2. चरित्र-चित्रण
3. कथोपकथन या संवाद
4. देशकाल वातावरण
5. भाषा-शैली और
6. उद्देश्य

4.1 'रिफ्यूजी कैम्प'- ज्ञानप्रकाश विवेक

4.1.1 कथावस्तु

कहानी में कथावस्तु का विशेष महत्त्व है। कहानी कलेवर की दृष्टि से लघु होती है। कहानी में मानव जीवन के किसी एक अंग का चित्रण होता है। ''हिंदी साहित्य कोश'' में कहानी की कथावस्तु के बारे में लिखा है, ''कहानी का कथानक बहुत छोटा होता है, उसमें घटना-प्रसंग और दृश्य तथा पात्र और उनका चरित्र-चित्रण अत्यंत न्यून सूक्ष्म और संक्षिप्त होता है।'' ३ कहानी की कथावस्तु के लिए संवेदना, कौतुहल, उत्सुकता, संघर्ष, करुणा आदि गुणों का होना अनिवार्य माना जाता हैं। जिससे कहानी की कथावस्तु पाठकों को आकर्षित करती हैं।

'रिफ्यूजी कैम्प' - ज्ञानप्रकाश विवेक द्वारा लिखित कहानी की कथावस्तु इसप्रकार है। प्रस्तुत कहानी में लेखक ने शरणार्थियों की व्यथा को चित्रित किया हैं। कैम्प के अधिकारी लोग शरणार्थियों का शारीरिक और मानसिक शोषण करते हैं। यहाँ तक शरणार्थियों की बहू-बेटियों पर बलात्कार करते हैं। इस पक्ष को लेकर लेखक ने प्रस्तुत कहानी लिखी है। प्रस्तुत कहानी में गौण कथावस्तु का अभाव रहा है।

4.1.2 चरित्र-चित्रण :-

कहानी में चरित्र-चित्रण का विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। कहानी में चरित्र-चित्रण के बारे में 'चंद्रभानु मिश्र 'प्रभाकर' ने लिखा है, - ''कहानी में पात्रों की संख्या न्यूनातिन्यून होती हैं। प्रत्येक पात्र अपना सांकेतिक व्यक्तित्त्व ही उपस्थित करते हैं। वे घटनाओं से बंधे रहते हैं। पात्र घटनाओं की अभिव्यक्ति के साधन मात्र होते हैं।''४ कहानी के पात्र सजीव और व्यक्तित्त्व पूर्ण होने चाहिए। चरित्र-चित्रण में सबल और निर्बल दोनों ही पक्षों के चरित्र कहानी में होते हैं, तो कहानी सुंदर बन जाती है।

'रिफ्यूजी कैम्प' कहानी में दो प्रमुख पात्र है। नायक का नाम नहीं दिया गया है। नायक के बेटे का नाम अचुबा है। इन दो पात्रों के ईर्द-गिर्द कथावस्तु घूमती रहती है। नायक के अन्य बेटे, कैम्प के अधिकारी गौण पात्र हैं। कैम्प के अधिकारियों द्वारा शोषण किये जानेपर नायक उसके विरोध में आवाज नहीं उठाता। यह उसके चरित्र की सबसे बडी विशेषता है।

4.1.3 कथोपकथन या संवाद :-

कथोपकथन या संवाद यह तत्त्व कहानी का प्राणतत्त्व है। संवाद के माध्यम से कहानी में स्वाभाविकता आ जाती है। 'हिंदी विश्वकोश भाग क्र-२' में कहानी के कथोपकथन की विशेषता स्पष्ट करते हुए लिखा है, - ''कहानी का कथोपकथन या संवाद भी एकाग्रता के सिद्धांत से ही अनशासित होता है। वह नपातुला, संक्षिप्त और सांकेतिक होता है।'' ५ संवाद कहानी में चरित्र का चित्रण वर्णन में रोचकता तथा प्रवाह और कथावस्तु को विकास की ओर ले जाने का काम करते हैं।

'रिफ्यूजी कैम्प' कहानी में नायक प्रथम पुरुष एकवचन में स्वयं पर घटित अत्याचार की कहानी अपने शब्दों में सुनाता हैं। फलस्वरुप प्रस्तुत कहानी में संवाद नहीं दिखाई देते।

4.1.4 देशकाल वातावरण :-

कहानी में सजीवता और स्वाभाविकता लाने के लिए देशकाल वातावरण बहुत बडी भूमिका अदा करता है। प्रस्तुत तत्त्व के अंतर्गत साज-सज्जा, रीति-रिवाज, रहन-सहन, आचार-विचार, प्रकृति वर्णन , नगर वर्णन ऋतु वर्णन आदि का समावेश इसमें होता है। कहानी के देशकाल वातावरण तत्त्व के बारे में ''हिंदी विश्वकोश भाग क्र. -२ '' में लिखा है, ''कहानी के वातावरण की सृष्टि चरित्र की आकृति, वेशभूषा, भाषा, परिस्थिति, देशकाल, उथल-पुथल आदि की अन्विति का फल होता है।'' ६

'रिफ्यूजी कैम्प' कहानी में देशकाल वातावरण का सुंदर निर्वाह हुआ है। नायक के स्वगत कथन से कहानी में सुंदर शब्दचित्रों के माध्यम से देशकाल वातावरण को चित्रित किया हैं।

4.5 भाषा-शैली :-

कहानी की सफलता उसकी भाषा पर निर्भर होती है। कहानी की भाषा वातावरण, परिस्थिति और पात्र के अनुकूल होनी चाहिए। स्पष्ट, व्यावहारिक, शुद्ध , सरल, स्वच्छ, गंभीर और भावपूर्ण स्थलों पर परिवर्तनशील भाषा कहानी के सौंदर्य को बढ़ावा देती है। कहानी की भाषा शैली के बारे में डॉ . भगीरथ मिश्र ने लिखा है, -''भाषा और शैली के विषय में कहानीकार को काफी स्वतंत्रता होती है। पात्रों के अनुकूल और अपनी रुचि के अनुसार भाषा का प्रयोग होना चाहिए, जो

कथानक और चरित्र-चित्रण को वर्णन और कथोपकथन द्वारा व्यक्त कर सके। आजकल के कुछ कहानीकार काव्यमयी भाषा का प्रयोग करते हैं और कुछ स्वाभाविक बोल-चाल की भाषा का, कुछ भाषा की भावूकता लेकर चलते हैं, कुछ संकेतमय आवश्यक और प्रकाशन में समर्थ संक्षिप्त शब्दावली अथवा प्रतीकों का उपयोग करते हैं।''७ लोकोक्तियों एवं मुहावरों से युक्त भाषाशैली पाठकों पर गहरा प्रभाव डालती हैं।

4.1.5 विवेच्य कहानी की भाषा में उर्दू, अरबी शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है। जैसे, जहीन, तरीन, बेतरतीब, जिल्हन, निहायत, लिहाज, बारास्ता, तल्खी, खलिश, शख्स, अजीज, खौफ, जंग, शय, तहरीर आदि। प्रस्तुत कहानी में वर्णनात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

4.6 उद्देश्य :-

कहानी का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना ही नहीं है, उसका ध्येय मानव जीवन के तथ्यों का विश्लेषण तथा मानव मन का निकट से अध्ययन करना है। मालती शास्त्री ने कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए लिखा है, - ''कहानी के तीन उद्देश्य माने जा सकते हैं --''

१. किसी विशिष्ट प्रवृत्ति को जगाकर हृदय को संवेदनशील बनाना।
२. किसी विशिष्ट सिद्धांत अथवा विचार का प्रतिपादन करना या प्रचार करना।
३. सुंदर भाव-चित्रों द्वारा पाठक का मनोरंजन करना।'' ८ यथार्थ में कहानी हमारी समस्याओं का हल नहीं करती। बल्कि वह मार्गदर्शन भी करती है।

'रिफ्यूजी कैम्प' कहानी का उद्देश यह रहा हैं कि, शरणार्थियों के शोषण

की समस्या पर प्रकाश डालना और उनकी करुण गाथा को पाठकों के सामने रखना।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में कहानी के तत्त्वों का सुंदर निर्वाह हुआ हैं।

4.2 'अरण्यरात्रि की महक' – राकेश कुमार सिंह

4.2.1 विवेच्य कहानी की कथावस्तु आदिवासी जन-जीवन में व्याप्त अंधविश्वास को उजागर करती है। कोयली मुंड़ा के जीवन की एक छोटी सी घटना को लेकर प्रस्तुत कहानी लिखी गई है। यही उसकी मुख्य कथावस्तु है। सन् चौरासी के दंगों से संबंधित कथांश गौण कथावस्तु के अंतर्गत आता है।

4.2.2 विवेच्य कहानी का नायक कोयली मुंड़ा है। उसका मित्र फौजासिंह है। यह दोनों प्रमुख पात्र हैं। कोयली मुंडा की पत्नी और उसका बेटा डोनका गौण पात्र हैं। कहानी का नायक अंधविश्वासू है, गरीब है। वह आदिवासी परिवेश में रमनेवाला युवक है। यही उसके चरित्र की विशेषता है।

4.2.3 विवेच्य कहानी में संवादों के दर्शन होते हैं। लेकिन उसमें आदिवासी समाज में प्रचलित भाषाओं के कुछ शब्द दिखाई देते हैं। उदा.''चुप कर ओय.... !'' फौजा सिंह ने कोयली को झिड़का, ''बेकार की गल न कर ! पत्थर-माटी में कोई छूत-भूत नईं लगदा।''

''पत्थर नहीं है सैब .....! '' आर्त हो उठा कोयली का स्वर , 'बोंगा है। दीकू देवता ...!'' ९

4.2.4 विवेच्य कहानी आदिवासी जन-जीवन से संबंधित होने के कारण आदिवासी परिवेश को लेखक ने सुंदर ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। 'डोनका' कोयली 'मुंडा' 'गंजेड़ी बाबा' आदि पात्र आदिवासी हैं।

4.2.5 विवेच्य कहानी में आदिवासी जन-जीवन में व्याप्त भाषा का प्रयोग हुआ है।

जैसे, ''अवलि अलह नुरु उपइर्या.... कुदरति के सभ बन्दे,... एकु नूर ते सभु जग उपजियाँ, कउन भले को मन्दे.... ! ''१० प्रस्तुत कहानी में संवादात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

4.2.6 विवेच्य कहानी के माध्यम से लेखक ने आदिवासी जन-जीवन में व्याप्त अंधविश्वास पर प्रकाश डालकर उसका परिचय पाठकों को करा देना यही उद्देश्य हैं।

4.3 'पापिन -पाँखी'- चंद्रिका ठाकुर ''देशदीप''

4.3.1 'पापिन पाँखी'- चंद्रिका ठाकुर 'देशदीप' विवेच्य कहानी में नायिका कामा बुआ की व्यथा को चित्रित किया गया है। उसका मानना है कि, दलचिरैया चिड़िया अपशकुन बोली बोलती है। जिससे अपने परिवार के सदस्यों की मृत्यु हो जाती हैं। ऐसे अंधविश्वास पर आधारित प्रस्तुत कहानी हैं।

4.3.2 विवेच्य कहानी नायिका प्रधान है। कामा बुआ उसकी नायिका है। वह अंधविश्वासी है , अनपढ़ है। यही उसके चरित्र की महत्त्वपूर्ण विशेषता हैं। कामा बुआ के बड़े भैया और उसकी पत्नी आदि गौण पात्र हैं।

4.3.3 विवेच्य कहानी में संवाद पाए जाते हैं। प्रस्तुत कहानी ग्रामीण परिवेश पर आधारित होने के कारण इसमें ग्रामीण बोली के दर्शन होते हैं। उदा ''तभी कक्का कराहने हुए बोले '' बछबा ने सींगों से जोर से मार दिया है यहाँ ..... बहुत दर्द हो रहा है ...। बचा लीजिए।'' असह्य वेदना से वे रोने लगे। अब तक तो सामान्य दर्द समझा जा रहा था। भूत-प्रेत, हवा-बतास की झाड़फूँक हो रही थी। स्थिति की गंभीरता समझकर कृपानाथ जी ने कह दिया , ''देखते क्या हो..... शहर.... लेकर जल्दी भागों.....! केस हाथ से निकल जाएगा !''११ प्रस्तुत कहानी में संवाद पात्रानुकूल, परिस्थितिनुकूल हैं। जिससे संवादों में रोचकता आ गई हैं।

4.3.4 विवेच्य कहानी में ग्रामीण जीवन का चित्रण लेखक ने यथार्थता के साथ प्रस्तुत किया है। वातावरण को प्रभावशाली रुप में चित्रित किया है। वातावरण को प्रभावशाली रुप में चित्रित करने के लिए लेखक ने सुंदर प्रतीकों का प्रयोग किया हैं। उदा. ''...पिर्र ऽऽऽ.... पिर्र ऽऽऽ.... पिरपिरा उठी चिड़िया तो कामा बुआ के कान में पिघला हुआ तेल पड गया जैसे अगिन-बाण उतर गया कलेजे में तीन रात से लगातार इसी सहुछा गाछ पर दलचिरैया बोल रही है ! एक ही समय ..... रोज अधरतिया में ! बडा अपशकुन होता है - ''इस मुँहजली की बोली... ! ''१२

इस प्रकार वातावरण निर्मिति का सुंदर प्रयास प्रस्तुत कहानी में दिखाई देता है।

विवेच्य कहानी की भाषा पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल है।

4.3.5 विवेच्य कहानी में वर्णनात्मक शैली के दर्शन होते हैं। कहानी को आकर्षक बनाने के लिए कहानीकार ने ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग किया हैं। उदा पिर्र ऽऽऽ... पिर्र ऽऽऽ... हुँ.....ऊँ ऽऽऽ...म पिर्र ऽऽऽ... पिर्र ऽऽऽ..., हुँ .... ऊँ ऽऽऽ...म। आदि।

4.3.6 विवेच्य कहानी के माध्यम से कहानीकार ने ग्रामीण जन-जीवन में व्याप्त अंधविश्वास पर प्रकाश डाला है। यही कहानी का उद्देश्य है।

4.4 <u>'दलदल' - राजी सेठ</u>

4.4.1 विवेच्य कहानी का नायक अमर है। उसकी पत्नी आरती है। पत्नी नौकरी करती है। पति बेकार है। प्रस्तुत कहानी में नौकरी पेशा नारी की व्यथा को सशक्त ढंग से चित्रित किया है। आरती विपरित परिस्थिति में अपने पति को नौकरी देने के लिए छटपटाती है। लेकिन कहानी के अंत में वह निराश हो जाती है। प्रस्तुत कहानी के अंतर्गत कुल दो प्रसंग हैं। वह मुख्य कथा को मजबूत बनाते हैं।

4.4.2 विवेच्य कहानी के अंतर्गत कुल मिलाकर छः पात्र हैं। कहानी का नायक

अमर बेकार है। उसकी पत्नी आरती अर्थार्जन करते हुए अपने घर का आर्थिक स्तर उन्नत बनाने के लिए अन्य पुरुषों के साथ मिलती रहती है, जो नायक को पसंद नहीं है। अमर, आरती, क्रमश: नायक नायिका है, तो उनका बेटा अंशु, वर्मा साहब और आरती की सास गौण पात्र हैं।

4.4.3 विवेच्य कहानी में संवादों के दर्शन होते हैं। संवाद पात्रानुकूल, परिस्थितिनुकूल विषय के अनुकूल हैं। उदा. ''कागज तैयार हो गये हों तो लेती जाऊँ। एक दो दिन बाद तुम जाकर मिल लेना।'' ''कहा न मुझे जल्दी नहीं है, मैं कुछ ओर सोच रहा हूँ।''

''कुछ और क्या ?''

''तुम जाओ न अभी। घड़ी तो देखो।'' वह 'कुछ ओर' क्या है आरती को सच में इस समय जानने का समय नहीं है। शाम को आएगी तो समझेगी।''१३ इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में संवादात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

4.4.4 विवेच्य कहानी महानगरीय परिवेश को लेकर लिखी गई फलस्वरुप महानगरीय बोध से संबंधित अन्य चित्रों का दर्शन कहानी में होता हैं। अंग्रेजी शब्दों के कारण वातावरण निर्मिति में सजीवता आ गई है।

4.4.5 विवेच्य कहानी में अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है। उदा. ग्राउंड पोस्टिंग, रिटायरमेण्ट, एडमिनिस्ट्रेशन, ऑफर आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। उसके साथ-साथ 'नत्थी करना,' 'नजाकत', खैरख्वाह आदि शब्दों का प्रयोग किया है। जो कहानी की भाषा में मधुरता उत्पन्न करता है।

विवेच्य कहानी में नाटकीय शैली के दर्शन होते हैं, जिससे कहानी में रोचकता आ गई है। उदा.

''वो कब गये ?''

''पता नहीं।''

''रामू दूध दे गया है ?''

'' पता नहीं।''

''और अम्मा ?''

''पता नहीं।'' १४

4.4.6 विवेच्य कहानी के शीर्षक में ही कहानी का उद्देश्य स्पष्ट है। कहानी के प्रमुख पात्र 'दलदल' में फँसे हैं। जिससे उपर नहीं उठ सकते । नौकरी पेशा नारी की दयनीय स्थिति का चित्रण करना प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य है।

4.5 'कई-कई शक्लोंवाले प्रेत' - शिवकुमार यादव

4.5.1 विवेच्य कहानी में सांप्रदायिक दंगों की भीषणता को स्पष्ट किया है। कहानी के नायक का नाम नहीं दिया गया है। नायक का परिवार सांप्रदायिकता की आग में झुलसता रहता है। इस मुख्य कथा के साथ-साथ पूर्व दीप्ति शैली में छोटे-छोटे प्रसंगों की निर्मिति की गई हैं , जो प्रसंग गौण कथावस्तु के रुप में उभरकर आए हैं।

4.5.2 विवेच्य कहानी में नायक और उसके पिताजी कहानी के प्रमुख पात्र हैं। नायक का बडा भाई, उसकी पत्नी आदि गौण पात्र हैं। निरीह पढ़ा लिखा युवा नायक हैं, जो सांप्रदायिकता की गर्त में फंसता हुआ नजर आता है। यही उसके चरित्र की महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

4.5.3 विवेच्य कहानी में 'संवाद' पात्रानुकूल, परिस्थिति के अनुकुल दिखाई देते हैं । जिससे संवादों में सजीवता, जिंदादिली आ गई हैं। उदा --९९

''जी....जी बाबूजी !'' मुझे होश आया और कल्पनालोक से सीधे धरती पर उतर आया।

''कहाँ खोये हुए थे ?''

" मैं मौन रहा।"

''कल का इण्टरव्यू कैसा रहा ?'' बाबूजी ने अपना रुख बदला।

''अच्छा रहा।''

''सिर्फ अच्छा रहा ?''

''इस बार पूरी उम्मीद है कि.....।''

''यह सुनते-सुनते कान पक गये। '' बाबूजी फिर से तनावग्रस्त हो गये।"१५

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में संवादों के दर्शन होते हैं।

4.5.4 विवेच्य कहानी महानगर में व्याप्त सांप्रदायिक दंगे के वातावरण को स्पष्ट करती है। लेखक ने सुंदर शब्द चित्रों के माध्यम से वातावरण निर्मिति का सशक्त प्रयास किया हैं। जैसे, -

''रात की भयावह गलियों में कुत्ते बेखौफ घूमते थे। मगर भौंकते नहीं ! मालूम नहीं उनके भोंकने को क्या हो गया था। घर के अन्दर चूहे की कूद-फाँद जारी थी। सन्नाटे का भरपूर फायदा उठाने में कोई कसर नहीं रखी थी। उस वक्त पूरा मुहल्ला सकते में आ गया, जब मकान पर गुण्डों ने हमला बोल दिया था।'' १६

इस प्रकार वातावरण निर्मिति का सुंदर प्रयास प्रस्तुत कहानी में किया गया है।

4.5.5 विवेच्य कहानी महानगरीय बोध को चित्रित करती है। फलस्वरुप महानगरों में प्रचलित अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग प्रस्तुत कहानी में दिखाई देता हैं। साईकिल, कारपोरेशन, टी स्टॉल, रिटॅन, ओरल, डिग्री, एम्.कॉम्, अॅकडमी आदि शब्दों का प्रयोग भाषा में रोचकता निर्माण करता है।

विवेच्य कहानी में वर्णनात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

4.5.6 विवेच्य कहानी में लेखक ने सांप्रदायिक दंगे से प्रभावित दयनीयता का यथार्थ चित्रण पाठकों के सामने रखकर सांप्रदायिक दंगों की दाहकता पर प्रकाश

डालने और उससे प्रभावित परिवारों की दयनीय स्थिति का चित्रण करना कहानीकार का उद्देश्य रहा थे।

4.6 'प्रत्याशा' – ए. असफल

4.6.1 विवेच्य कहानी में तीन मित्रों का पंछी प्रेम चित्रित हैं। सिंह, मोहकम, शर्मा यह तीनों मित्र हैं। वे एक ही कार्यालय में काम करते हैं। उस कार्यालय में कबूतर के दो जोडे हैं, जिसपर वे अपार प्रेम करते हैं। एक सामान्य प्रसंग को लेकर लेखक ने कलात्मक ढ़ंग से, कहानी के माध्यम से साकार रुप दिया है। प्रस्तुत कहानी में गौण कथा का अभाव है।

4.6.2 विवेच्य कहानी में सिंह, मोहकम, शर्मा यह तीन प्रमुख पात्र हैं। चौकीदार आदि पात्र गौण हैं। यह तीनों मित्र कबूतरों पर इतना प्रेम करते है, जिसकी वजह से यह कबूतर भी प्रस्तुत कहानी के प्रमुख पात्र बन गए हैं। तीनों मित्रों की गहरी दोस्ती , उनका आपसी प्यार, पंछी प्रेम यह उनके चरित्र की सबसे बडी विशेषताएँ हैं।

4.6.3 विवेच्य कहानी में लघु, चुस्त संवादों के दर्शन होते हैं। जिससे कहानी आकर्षक बन पडी है। कहानी में संवादों के दर्शन होते हैं। उदा, ''हाँ, उसकी आँखें कैसी थीं ?'' घबराहट में पूछा मोहकम ने। ''लाल-लाल और निकली पड रही थीं...।''

लड़के ने सब बता दिया। सिंह ने उसी रोज चिट्ठी लिखी कि इस चौकीदार की जरुरत नहीं है। सारे रिकार्ड़ की हमारी जिम्मेदारी।.... साहब की सली लगाई और दस्तखत करवाकर थाने में भेज दिया कागज।''१७

इस तरह विवेच्य कहानी में संवाद सुंदर बन पडे हैं।

4.6.4 विवेच्य कहानी में कार्यालय का चित्रण होने के कारण लेखक ने ऐसे सुंदर शब्द -चित्रों की निर्मिति की है जिससे कार्यालय का परिवेश पाठकों के आँखों के

सामने दिखाई देता है । उदा, ''तीनों के पीछे कमरे की दीवार थी जिससे तीनों की आलमारियाँ सटी रखी थीं। आलमारियों के बाद कुर्सियाँ और कुर्सियों के बाद उनकी टेबिलें थी। टेबिलों के बाद 4" x 15" के खाली स्थान के बाद फिर एक दीवार थी जिसमें दो ब्रड़े-बड़े आले छिके हुए थे ! टेबिलों के बाद के इस गैलरीनुमा स्थान के दोनों सिरों पर एक-एक दरवाजा था। इनमें से एक बरामदे में खुलता और दूसरा पीछे के स्टोर रुम में।'' १८

इस प्रकार वातावरण निर्मिति प्रस्तुत कहानी का प्राण बन गई है।

4.6.5 विवेच्य कहानी में लेखक ने ऊर्दू भाषा के शब्दों का प्रयोग किया है। उदा - अलबत्ता, सहूलियत, अहम, सव्वल, बदस्तूर, हुज्जत, रफ्तार, ख्याल, शिनाख्त आदि शब्दों का प्रयोग किया है।

विवेच्य कहानी में छोटी कविता प्रस्तुत की गई है, जिससे कहानी में काव्यात्मकता के दर्शन होते हैं। उदा.,

''... और एक बार तो एक समूची कविता ही बन पडी !''

''मार्च में हर साल ट्यूब लाईट के ऊपर
दो नई चिडियाँ आकर घोंसला बनाती हैं ....
जो बनता नहीं बिखर जाता है तिनका-नितका
हर सुबह मेरी मेज पर बटोरकर आलमारी में रख देता हूँ
ताकि उन्हें सहूलियत हो, पर घोंसला वहाँ टिकता नहीं
ट्यूब लाइट के ऊपर ..... फिर भी मार्च में हर साल
ट्यूब लाईट के पर.... दो नई चिडियाँ
आकर घोंसला बनाती हैं ! '' १९

प्रस्तुत कहानी में भाषा प्रसंगानुकूल, पात्रानुकूल है। वर्णनात्मक शैली के

दर्शन होते हैं।

4.6.6 विवेच्य कहानी का उद्देश्य यह रहा है कि, पंछी प्रेम का चित्रण करना।

4.7 'पारुल दी'- दिनेश पाठक

4.7.1 विवेच्य कहानी की नायिका पारुल दी है। वह परित्यक्ता है। वह जिंदगी में हार न माननेवाली है। ससुराल द्वारा प्रताड़ित पारुल दी मायके में आनेपर उपेक्षा का पात्र बनती है। अंत में वह आत्मनिर्भर बन जाती है। कुछ गौण कथा प्रसंग पारुल दी की कथावस्तु को मजबूत करते हैं।

4.7.2 विवेच्य कहानी की नायिका पारुल दी है। वह अनपढ़ है वह अपने बलबूतेपर शिक्षित , आत्मनिर्भर बन जाती है। यही उसके चरित्र की विशेषता है। पारुल का चचेरा भाई, पारुल का पति, माता-पिता, सास-ससुर आदि पात्र गौण हैं।

4.7.3 विवेच्य कहानी ग्रामीण जीवन पर आधारित होने के कारण ग्रामीण बोली के दर्शन इसमें होते हैं। कहानी में आए हुए संवाद कथावस्तु को आगे बढ़ाने में सहायक हैं। उदा,

''तो क्या हुआ ..... यह तो मैने अपने हिस्से से बचाकर रखा है। '' वह मुसकराती आँखों से मुझे देखती। चेहरे पर लाड उभर आता। कहती, '' चल चलते हैं। घास की टोकरी भर गई है... मेरे सिर पर रख। ''

हम लौटने लगते। मैं अचानक प्रस्ताव करता, ''पारुल दी, सोच रहा हूँ इस बार जाडों में तुम्हें पढना-लिखना सिखाऊँ। कैसा ?''

''ठीक.....। '' वह चहक उठती।'' २०

इस प्रकार कथोपकथन में रोचकता दिखाई देती है।

4.7.4 विवेच्य कहानी में ग्रामीण परिवेश का सुंदर चित्रण बडे लगाव के साथ

कहानीकार ने प्रस्तुत किया है। कहानी पढते समय भारत वर्ष के किसी गाँव में यह कहानी घटित हो रही है। ऐसा वातावरण कहानी में निर्माण करने की कोशिश लेखक द्वारा की गई है। उसमें लेखक को सफलता मिली है।

4.7.5 विवेच्य कहानी में ग्रामीण जन-जीवन का चित्रण होने के कारण ग्रामजीवन से संबंधित कुछ शब्दों के दर्शन होते हैं , जैसे 'घास काटना', 'गोड़ाई करना' आदि। विवेच्य कहानी में वर्णनात्मक शैली के साथ-साथ नाटकीय शैली के दर्शन होते हैं।

4.7.6 विवेच्य कहानी के माध्यम से कहानीकार ने पारुल दी जैसी परित्यक्ता स्त्री के मन की व्यथा को पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया है।

4.8 'पाँच दिन'– सुनीता जैन

4.8.1 विवेच्य कहानी अमेरिका के निवासी एक दम्पत्ति जीवन में आनेवाली बिखराव का चित्रण करती है। नायक ललित है। उसकी पत्नी प्रज्ञा है,यह दोनों अमेरिका में रहते हैं। ललित की माँ जानकी पाँच दिन अपने बेटे के घर रहने के लिए जाती है,तो वहाँ पर उसकी बहू प्रज्ञा उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करती। यही प्रस्तुत प्रसंग प्रमुख कथा है।

4.8.2 विवेच्य कहानी में जानकी, प्रज्ञा और ललित कहानी के तीन प्रमुख पात्र हैं । प्रज्ञा घमंड़ी है। वह आपनी सास के साथ अच्छा व्यवहार न करने के कारण घृणा का पात्र बन जाती है। जानकी संवेदनशील है। तो ललित अपनी पत्नी के इशारों पर नाचनेवाला व्यक्ति है। मीरा, मनु, आदि गौण पात्र हैं।

4.8.3 विवेच्य कहानी में लघु, चुस्त संवादों के दर्शन होते हैं , जिसके कारण कहानी पाठकों पर गहरा प्रभाव डालती हैं। कहानी में आए लघु, चुस्त संवाद इसप्रकार है।

''क्यों जा रहे हो अब? ''जानकी ने पूछा था। ''यहाँ नहीं रह सकता, इस करप्ट देश में। मीरा के विवाह होने तक रुका था। अब वापिस वहीं जाऊँगा, जहाँ मेरी ट्रेनिंग हुई विज्ञान में। बहुत काम करना है मुझे ..... रिसर्च ....''

''और मैं ?''

''तुम भी चलो। छोड़ो यह दों टके की प्रोफेसरी।''

''और मनु ?''

''उसे तो अभी वीसा नही. मिलेगा। इक्कीस से ऊपर है वह।''

''मनु को अकेले कैसे छोड दूँ ? और इस घर को ? ''

''तो रहो। मुझे तो जाना है। मुझे कोई अटैचमेंट नहीं।''२१

4.8.4 विवेच्य कहानी में जानकी की घुटन को साकार रुप देनेवाला चित्रण आकर्षक रुप में लेखक ने प्रस्तुत किया है। विवेच्य कहानी अमेरिका में घटित होने के कारण वहाँ के खंड चित्रों का वर्णन कहानी की वातावरण निर्मिति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

4.8.5 विवेच्य कहानी में प्रवाहमई भाषा के दर्शन होते हैं। जिससे कहानी तीव्र गति के साथ आगे बढ़ती है। कहानी में 'गीता' का एक श्लोक उद्धृत किया गया है, जिससे कहानी में रोचकता के दर्शन होते हैं। प्रस्तुत कहानी वर्णनात्मक शैली में लिखी गई है।

4.8.6 औद्योगिकरण की वजह से आज मानव अपने खून के रिश्तों को भूल रहा हैं। इस पक्ष का चित्रण करना विवेच्य कहानी का उद्देश्य है।

4.9 'ढ़ेला' - आनंद बहादुर

4.9.1 विवेच्य कहानी के नायक मदनबाबू है। वे एक बैंक में नौकरी करते हैं। जिस रास्ते से वे याता-यात करते हैं, उस रास्ते में एक ढ़ेला पडा हुआ था। इस छोटे से प्रसंग को कहानीकार ने अत्यंत सुंदर रुप में पिरो देने का काम किया है।

4.9.2 विवेच्य कहानी के नायक मदन बाबू हैं। वे हमेशा आपा-धापी में जीवन व्यतीत करते हैं। तनावपूर्ण वातावरण में रहने की उन्हें आदत-सी पड गई है। यह उनके चरित्र की विशेषता है। नायक का मित्र कहानी का गौण पात्र है।

4.9.3 विवेच्य कहानी को गतिशील, सरल बनाने के लिए संवादों की निर्मिति की गई है।

उदा - ''इन सबसे क्यो होगा ?'' दोस्त ने अविश्वास से पूछा। ''आप नहीं जानते मदनबाबू ! पत्थर बहुत सावधानी से बनाना पडता है। कैसा पत्थर लगेगा, कौन धातु में जडना पडेगा, सबका बहुत हिसाब लगाना होता है। नहीं तो लेने के देने-''

''सही बात है , सही बात है।'' वह बड़बड़ाया।

''ये पत्थर-वत्थर सब बकवास है !'' दोस्त चिढ़ गया था।

''मैं आज ही द्राक्षासव खरीदता हूँ।'' उसने मित्र को भरोसा दिलाया, फिर कागज पर सारी जानकारी लिखकर चायवाले को दे दी।''

इस प्रकार कहानी के संवाद, पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल नजर आते हैं।

4.9.4 विवेच्य कहानी में महानगरीय जीवन की आपाधापी को चित्रित किया है।

4.9.5 विवेच्य कहानी में पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल भाषा के दर्शन होते हैं। कहानी में कुछ ऊर्दू ,फारसी के शब्दों का प्रयोग नजर आता हैं।'

उदा - शरीक, तबील, तराशे, सक्त, वजहिर, खासा, हादस आदि।

विवेच्य कहानी में वर्णनात्मक शैली के दर्शन होते हैं ।

4.9.6 विवेच्य कहानी कें माध्यम से लेखक ने महानगरीय विसंगतियों को पाठकों के सामने रखा हैं। यही कहानी का उद्देश्य है।

4.10 'द्वंद्व समास : उर्फ कथा एक तिलिस्म की'- राजेंद्र लहरिया

4.10.1 विवेच्य कहानी का नायक रोशन है। वह गाव में रहता है। उसकी पत्नी और उसके विचारों में काफी अंतर है। अतएव दोनों में संघर्ष होता हैं। नायक नास्तिकवादी हैं , तो उसकी पत्नी देवधर्म में रममाण होनेवाली है। उसकी पत्नी अंधविश्वास की शिकार बन जाती है। यही कहानी की मुख्य कथावस्तु है। जमींदार का प्रसंग गौण कथा के रुप में है।

4.10.2 विवेच्य कहानी का नायक रोशन है । वह सीधा-साधा, भोला-भाला, नास्तिक है। तो उसकी पत्नी का स्वभाव उसके स्वभाव के बिलकुल विपरित है। जमींदार, रघुवर दयाल आदि गौण पात्र हैं।

4.10.3 विवेच्य कहानी में कहानीकार ने संवादों का प्रयोग किया हैं। जिससे कथावस्तु तीव्रता के साथ आगे बढती है।

''भगवान जी ऐं , और का है ! '' उसने तुरन्त जबाब का लट्ठ मारा था।

''भगवान जी ! '' रोशन के भीतर कुछ अजीब तरह घुमड़ रहा था,'' काये के काजें हैं ये ?'' उसने घरवाली की तरफ देखा।

''पूजा के काजें !'' तत्काल जबाब।

''पूजा ..... '' २३

4.10.4 विवेच्य कहानी ग्रामीण जन-जीवन की दास्तान है। वातावरण निर्मिति के लिए लेखक ने सुंदर भाव व्यक्त किए हैं। जैसे, ''उस हवेली में करीब पचास बड़े-बड़े कमरे थे जिनमें से कुछों को हमेशा काले पुते किवाड़ों में ताले लगाकर बन्द रखा

जाता था और जिनमें किसी की कभी भी भीतर झाँकने तक का अवसर नहीं मिला था, कुछों को अँधेरे ने कब्जिया रखा था। जिनमें किसी ने कभी भी रोशनी होते नहीं देखी थी। कुछों में घर की औरतों के पलंग बिछे थे, कुछों ने गल्ला भरा जाता था, एक में लाठियाँ, भाले, तलवारें और बन्दूकें रखी रहती थी। एक में तीन तिजोरियाँ दीवारों में चुनी हुई थी।''२४

4.10.5 विवेच्य कहानी की भाषा सरल,साधी है। कहानी में कुछ स्थानों पर ध्वन्यात्मक शब्दों के प्रयोग दिखाई देते हैं। कहानी दो खंडों में विभाजित हैं।

विवेच्य कहानी में वर्णनात्मक शैली के दर्शन होते हैं। उदा :-

''आबादी लगभग डेढ़ हजार और जिसमें परिवारों की संख्या करीब दो की थी। इन परिवारों में सभी जाति और वित्त के लोग थे। इनमें पैंतीस-चालीस परिवार ब्राह्मणो के थे। जिनमें से कुछ-एक पण्डिताई - पुरोहिताई का धन्धा करते थे और अधिक तर किसान थे, कुल मिलाकर पंचानबे - सौ परिवार चमारों, घानुकों, कोरियों, धोबियों, कुम्हारों, मेहतरों के थे। सब मिलाकर पचास-साठ परिवार दर्जी, लोहार, सुनार, वानिया, ठाकुर, काछी, भोई, तेली, कलार, अहीर जातियों के थे और गाँव की जातियों के इस गिनती-नक्शे के बीचों-बीच एक घर रामसजीवन महाते का था।'' २५

4.10.6 विवेच्य कहानी के माध्यम से कहानीकार ने ग्रामीण जीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। साथ ही साथ टूटते दम्पत्ति, जीवन पर प्रकाश डालने की कोशिश की है।

4.11 'अंतर्कथा' - पुन्नी सिंह

4.11.1 विवेच्य कहानी में कहानीकार ने बाल-सुधार गृहों में व्याप्त अवैध धंधों पर प्रकाश डाला हैं। प्रमोद कहानी का नायक है। उसने अपने चाचा का कत्ल किया है।

वह जेल में सजा भुगत रहा है। जेल के अधिकारी प्रमोद का शोषण करते हैं। प्रस्तुत कहानी इस पक्ष को लेकर लिखी गई है।

4.11.2 विवेच्य कहानी का नायक प्रमोद है। उसका मित्र महावीर सहनायक है। वास्तव में प्रमोद ने अपने चाचा का खून किया था। उसकी सजा वह भुगता रहा है। वह अन्याय के विरोध में लड़नेवाला है। वसीर खाँ, नगीना सिंह अधीक्षक और प्रमोद की माँ गौण पात्र है।

4.11.3 विवेच्य कहानी में कौतुहल जगानेवाले, नाटकीयता, उत्सुकता निर्माण करनेवाले कथोपकथनों की अवतारणा हुई हैं। जिससे कहानी सुंदर बन पडी है। उदा.

''क्या नाम है तुम्हारा ? ''

उन्होंने उससे पूछा, लेकिन उसने उनकी ओर देखा भी नहीं।!

''मैं पूछता हूँ तुम्हारा नाम क्या है ?''

''मेरा नाम ऑफिस में लिखा है।''

उसने खनकदार आवाज में कहा तो उन्होंने उसे उपर से नीचे तक एक बार फिर देख लिया।

''मैं तुझसे पूछ रहा हूँ।''

उनके स्वर में कुछ-कुछ अपनत्व जैसा था। लड़के ने कनखी से उन्हें देखा।

''प्रमोद मेरा नाम !''

''उस दिन तीन नंबर में झगड़ा क्यों किया था ? जानते हो, जिनसे झगड़ा किया था वो कौन है ? ''२६

4.11.4 विवेच्य कहानी में बाल-सुधार-गृह के वातावरण का प्रतिबिंब नजर आता है। लेखक ने वातावरण निर्मिति के लिए सुंदर वाक्यों को निर्माण किया हैं। जैसे -

''वहाँ सबसे ऊपर गुलाबी रंग का एक वर्गाकार पत्थर का टुकडा दीवार में लगा हुआ था। उस पर खुदा हुआ था - 'चाइल्ड स्पेशल जेल।' उससे नीचे लिखा गया था - 'बाल विशेष जेल।' उसके भी नीचे एक बड़ा-सा बोर्ड़ अभी कुछ दिन पहले लगवाया गया था। उस पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था - 'बाल सुधार गृह !' अधीक्षक बी.के. भट्ट सभी लोगों से कह चुके थे कि अब इस जगह के पुराने नाम को हम सबको भूल जाना चाहिए। यह अंग्रेजों का दिया हुआ नाम है और गुलामी का प्रतीक है।'' २७

4.11.5 विवेच्य कहानी में प्रवाहमयी भाषा के दर्शन होते हैं। प्रस्तुत कहानी में वार्ड नं. बैरक, नंबर, बोर्ड, चाईल्ड स्पेशल जेल आदि अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है। जो वातावरण को स्पष्ट करने के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

विवेच्य कहानी में विवरणात्मक शैली तथा नाटकीय शैली के दर्शन होते हैं।

4.11.6 बाल सुधार गृहों में होनेवाले बालकों के शोषण पर प्रकाश डालना और मौनी बाबा के शोषण को समाज के सामने लाना कहानी का उद्देश रहा है।

4.12 'मुझे उसे जिंदा रखना है' - मुशर्रफ आलम जौकी

4.12.1 विवेच्य कहानी का नायक जन्म से कृशकाय है। इसीकारण समाज में वह उपेक्षा का पात्र बनाता है। स्कूल समाज में वह तिरस्कृत बनता है। उसकी माँ उसपर अपार प्रेम करती है। नायक विवाहित होता है और वह मजदूरी करने लगता है। इन्ही प्रसंगों को लेकर लेखक ने प्रस्तुत कहानी लिखी है।

4.12.2 विवेच्य कहानी में नायक का नाम नहीं दिया गया। समाज में प्रतिपल उसकी अवहेलना होने के कारण वह दया का पात्र बन जाता है। नायक मातृप्रेमी है। यही उसके चरित्र की विशेषताएँ है। नायक की माँ, उसके पिताजी और अन्य कुछ पात्र गौण पात्रों की श्रेणी में आते हैं।

4.12.3 विवेच्य कहानी को आकर्षक बनाने के लिए कहानीकार ने लघु, चुस्त, सारगर्भित, आशयपूर्ण संवादों की योजना की हैं। इसी कारण कहानी को पाठक एक बार हाथ में लेता है, तो उसे पढ़ने के पश्चात् ही छोड़ देता है। उदा -

''तो आप भी पढ़ने को आये हैं ?''

'' हाँ ।''

''तो आप केा एहसास है, कि आप हैं ?''

''हाँ क्यों नही ?''

''आपको सचमुच एहसास है ?''

उफ ! शर्मिन्दगी की इन्तेहा थी। मैं घर आकर फूट-फूट कर रोया।

''नहीं मुझे नहीं पढ़ना है।''

''मगर क्यों ? '' माँ के लहजे में नाराजगी थी ।

''क्योंकि मैं हूँ ही नहीं।''२८

4.12.4 विवेच्य कहानी में वातावरण निर्मिति का सुंदर प्रयास किया गया है। जिसके कारण पाठक कहानी की ओर आकर्षित हो जाते है। कहानी का शीर्षक भी वातावरण निर्मिति में महत्त्वपूर्ण भूमिका करता हैं।

4.12.5 विवेच्य कहानी में उर्दू, अरबी, फारसी, शब्दों का प्रयोग हुआ है, जैसे इन्तेहा, खौफ, लहजा, चष्मदीद, इत्मीनान, तसल्ली बक्श जिससे कहानी पढ़ते समय पाठकों को कोई बाधा नहीं पहुँचती।

विवेच्य कहानी आत्मकथात्मक शैली में लिखी है। कहानी तीन परिच्छेदों में विभाजित हैं। नायक अपनी कहानी सुनाता है यही प्रस्तुत कहानी की विशेषता है।

4.12.6 असहाय, निरीह, नायक के जीवन की व्यथा का चित्रण करना विवेच्य कहानी का प्रतिपाद्य रहा है।

4.13 'औरत' - अशोक प्रियदर्शी

4.13.1 विवेच्य कहानी की नायिका सिमरन है। जो उच्च शिक्षित है। वह विधवा है। अपनी दो बेटियों के भविष्य के लिए वह छटपटाती है और उसमें सफलता प्राप्त करती है। इस कार्य में नायिका के मित्र प्रोफेसर उसकी सहायता करते हैं।

4.13.2 विवेच्य कहानी में सिमरन नायिका है। वह विधवा है। वह सुंदर है। उच्च शिक्षित है। वह आत्मनिर्भर है। यह उसके चरित्र की विशेषता है। मिसेस चड्ढ़ा सुदर्शन चोपडा, प्रोफेसर यह गौण पात्र हैं।

4.13.3 विवेच्य कहानी को आकर्षक बनाने के लिए, उत्सुकता जगाने के लिए , कौतुहल निर्माण करने के लिए कहानीकार ने आकर्षक संवादों की निर्मिति की हैं। उदा.

''हम बैठे। चड्ढ़ा साहब ने आवाज की, ''''मनजीत -ऽऽ ! आओ, देखो कोण आया है !''

''आई जी'' कहती हुई एक औरत आई और मिसेज अहलूवालिया को देखा तो उनके गले लग गई, ''अरे, सिमरन तू ! कब आई भला ! कहाँ ठहरी ? यहीं आ जाना था सट्रेट !'' सिमरन ने वही पुरानी सफाई दी, मेरा परिचय मिसेज चड्ढ़ा से कराया और फिर वे सब पंजाबी में बातें करने लग गये। मिसेज चड्ढ़ा ने चाशनी - धुले-से स्वर में मुझसे पूछा, ''आप माइण्ड तो नहीं कर रहे हो न ? बी हैव स्टार्टेड गॉसिपिंग इन पंजाबी !''२९

4.13.4 विवेच्य कहानी की कथावस्तु भारत तथा विदेश में घटित होती हैं। फलस्वरुप वहाँ के परिवेश का चित्रण कहानी में नजर आता है। नायिका की छोटी बेटी विदेश में रहती है। चंड़ीगढ़ में स्थित खान-पान, रहन-सहन का वर्णन कहानी में आया है। जिससे कहानी सुंदर बन गई है।

4.13.5 विवेच्य कहानी की नायिका चंडीगढ़ की निवासी है। फलस्वरुप कहानी की भाषा में पंजाबी भाषा के कुछ शब्दों का प्रयोग दिखाई देता हैं। जैसे, -

'बडी प्यारी पुत्तर है, ' 'रब दी सौ, प्यारी पुत्तर' आदि वाक्योंशों से कहानी की भाषा में मिठास निर्माण हुई हैं। विवेच्य कहानी में विवरणात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

4.13.6 महानगर में रहनेवाली एक विधवा नारी अपने बेटियों के करियर को लेकर किस प्रकार छटपटाती हैं। इस पक्ष पर प्रकाश डालना लेखक का प्रतिपाद्य है।

4.14 'तुम मेरी राखो लाज हरी' – मालती जोशी

4.14.1 विवेच्य कहानी की नायिका संध्या है वह विधवा है। वह सुंदर होने के कारण उसके ससुर उसपर आसक्त है। इस बात से संध्या की सास चिंतित है। एक ओर विधवा का जीवन यापन करते हुए संध्या समाज से अवमानित हो जाती है, तो दूसरी ओर अपने की ससुर की वासना का शिकार बनती है। यह मुख्य कथा है। विवाह का प्रसंग , अस्पताल का प्रसंग गौण कथा के रुप में उभर कर आए हैं।

4.14.2 विवेच्य कहानी की नायिका संध्या है।वह सुंदर है, विधवा है। विधवा होने के कारण वह अवमानित होती है। वह जिद्दी है। लेकिन उसपर हुए अत्याचार के विरोध में वह किसी के पास शिकायत नहीं करती। यह उसके चरित्र की प्रमुख विशेषता है। सास, ससुर, कृष्णा, सविता, सुरेश, नरेश आदि पात्र गौण हैं।

4.14.3 विवेच्य कहानी के संवाद लघु, आकर्षक, चुस्त है, जिससे कहानी में कौतूहलता के दर्शन होते है। जैसे,

''ये हाथ में क्या हुआ ?''

''कट गया।''

''कैसे ?''

थोडी देर चुप रहे, फिर बोले, ''दरवाजे में आ गया था।''

''दरवाजे में कैसे ?''

इन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। करवट बदलकर लेट गये। ठीक तो है। जब हमें कोई तकलीफ होती है, किसी की पूछ-ताछ भी अच्छी नहीं लगती।

''कुछ लगाया था ?''

''डेटॉल लगाया था।'' ३०

4.14.4 विवेच्य कहानी में वातावरण निर्मिति के लिए लेखिका ने सुंदर खंड़ चित्रों का निर्माण किया हैं। जिससे वातावरण निर्मिति में सजीवता आ गई है। जैसे -

''प्रतीक्षा कुछ ज्यादा ही लम्बी हो चली थी। बरामदे में बैठे सब लोग ऊँघने-से लगे थे। तभी कारीडोर से आती भारी पदचाप सुनाई दी और सबके सब एकदम सतर्क हो गये। यह अस्पताल की चिरपरिचत, सिस्टर लोगों की सौम्य किन्तु सधी हुई पदचाप नहीं थी, बल्कि पुलिस के जूतों की भारी-भरकम आवाज थी। पुलिस का वह सिपाही हमारे सामने से गुज़रता हुआ बाहर निकल गया। कुछ ही पल बाद वह लौटा तो अकेला नहीं था, इन्स्पेक्टर शुक्ला भी उसके साथ थे।''३१

4.14.5 विवेच्य कहानी की भाषा परिस्थिति अनुकूल, व्यावहारिक, स्पष्ट, शुद्ध, गतिशील दिखाई देती है। लेखिका ने अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए पौराणिक संदर्भों को भी प्रस्तुत किया है। जैसे,''आपने कुछ अच्छा ही सोचा होगा में जानती हूँ। घर की बात बाहर उछालनी नहीं चाहिए , पर आप तो अपनी हैं। आपसे क्या छिपाना ! इसके पिता की मृत्यु के बाद उस घर में बहू का राज हो गया। राज क्या है - पूरा रावण राज है। हम माँ-बेटी ने कैसे दिन गुजारे हैं मैं जानती हूँ। इसीलिए मैंने इसकी पढ़ाई भी पूरी नहीं होने दी। जल्दी शादी कर दी।''३२

विवेच्य कहानी की भाषा, आकर्षक, सुंदर दिखाई देती हैं। कहानी में

पूर्वदीप्ति शैली के दर्शन होते हैं। साथ ही साथ नाटकीय शैली का प्रयोग भी दिखाई देता है।

4.14.6 सुंदर बहू का अपने ही ससुर द्वारा होनेवाले शोषण पर प्रकाश डालना और विधवा जीवन की समस्या को समाज के सामने रखना प्रस्तुत कहानी का उद्देश है।

4.1 'कुछ कहना है '– नरेंद्र नागदेव

4.15.1 विवेच्य कहानी में अपनी बीमार माँ को मिलने के लिए छटपटानेवाले नायक की व्यथा पाई जाती है। नायक का बडा भाई अपनी माँ को अस्पताल में मिलने के लिए जाने के अलावा वह मुख्यमंत्री से मिलना उचित समझता है। माँ से अधिक उसे मुख्यमंत्री महत्त्व के लगते हैं। इस पक्ष पर लेखक ने कहानी के माध्यम से प्रकाश डाला है।

4.15.2 विवेच्य कहानी के नायक का नाम नहीं दिया गया है। नायक मातृप्रेमी है। वह अपने जी जान से अपनी माँ को अत्याधिक महत्त्व देते हैं। बडा भाई, प्रकाश ,नायक की माँ, मुख्यमंत्री आदि कहानी के गौण पात्र हैं।

4.15.3 विवेच्य कहानी मनोवैज्ञानिक घरातल पर लिखी गई है। मनोवैज्ञानिकता की दृष्टि से संवादों की निर्मिति की गई है। जैसे,

''लेकिन वह उतने विस्तार से तो नहीं बता पाया होगा न कि उस उँचाई तक पहुँचने के लिए मैंने क्या कुछ नहीं किया ! क्या कुछ नहीं सहा ! उससे क्या होता है? उन्होंने बेहद ठण्डे भाव से कहा। उससे .... क्या... होता... है ..?''

मतलब, उससे कुछ नहीं होता ?

उसके ये चार शब्द जैसे अलग-अलग दिशाओं से घुमते हुए आये और मुझे बिल्कुल

खत्म करते हुए निकल गये।'' ३३

4.15.4 विवेच्य कहानी में देशकाल वातावरण को सशक्तता के साथ प्रस्तुत किया है। आज-कल लोग राजनीति को अत्याधिक महत्त्व देने लगे हैं। इस पक्ष का चित्रण मुख्यमंत्री के प्रसंग से अपने-आप में स्पष्ट हो जाता है।

4.15.5 विवेच्य कहानी में पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल, परिस्थितिनुकूल भाषा के दर्शन होते हैं। जिससे भाषा में जिंदादिली आ गई है। कहानी में अंग्रेजी भाषा केशब्द भी दिखाई देते हैं। जैसे ट्यूब.. कनेक्ट, एअर-कंडीशन ,कोच, प्लेटफार्म आदि।

प्रस्तुत कहानी वर्णनात्मक शैली मे लिखी गई है।

4.15.6 आज का व्यक्ति अपने खून के रिश्ते को भूल रहा है। इस पक्ष पर प्रकाश डालना प्रस्तुत कहानी का प्रतिपाद्य रहा है।

4.16 'जंगल का सपना' – विजय

4.16.1 विवेच्य कहानी आदिवासी जीवन से संबंधित है। कहानी नायिका प्रधान है। अंजी उसकी नायिका है। अन्होर उसका प्रेमी है। यह दोनों गाँव में शिक्षा,और अन्य विकासात्मक कार्य करते हैं। लेकिन जंगल अधिकारी आदिवासी लोगों की बस्ती पर अतिक्रमण करते हैं। जिससे उनकी संस्कृति नामशेष हो रही है। यही कथावस्तु है।

4.16.2 विवेच्य कहानी की नायिका अंजी है। वह प्रकृति प्रेमी है। निस्वार्थ भाव से काम करनेवाली है। शिक्षा प्रेमी है। साथ ही साथ ग्रामवासियों के सुख-दुःख में साथ देनेवाली हैं। वह एकनिष्ठ प्रेमिका है। काका सिमोर, जंगल के अधिकारी यह पात्र गौण हैं।

4.16.3 विवेच्य कहानी के संवाद पात्रानुकूल, परिस्थितिनुकूल है। जिससे कहानी

सुंदर बन पडी है। कहानी की आधारभूमि आदिवासी जीवन से होते हुए भी कुछ अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग विवेच्य कहानी में हुआ है। जैसे, थ्री नॉ थ्री, नोट, सीमेंट, एस्बेस्टस, गजेटियर आदि। आदि शब्द पाठकों के गले नहीं उतरते। इसका कारण यह रहा है कि यह कहानी एक ओर आदिवासी जन-जीवन का प्रतिनिधित्व करती है। तो दूसरी ओर अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग भी संवादों में बाधा बनते हैं। विवेच्य कहानी में संवादों के दर्शन इस प्रकार होते हैं।

जैसे,

''क्या करोगे सब जमा करके और कॉपी में लिखकर ?'' ''लुप्त हो गये हैं ओझा मगर बच्चे पढ़ रहे हैं। एक दिन किताब से पढ़कर काफी कुछ जान जाएँगे। अपने लोगों का उपचार कर सकेंगे।' '

''शहरी भी तो वैद्यों की दवा से भागते हैं।''

''वक्त बदल गया है अंजी। अँग्रेजी दवा से सब परेशान हैं।''

''हम क्या अच्छी तरह बना सकेंगे ? ''३४

4.16.4 लेखक ने विवेच्य कहानी में आदिवासी जीवन का वातावरण बड़े लगाव के साथ चित्रित किया है। लेखक ने लिखा है,

''कभी नुरहीं में गोंड राजा था। गोंड़, कोल और किरात प्रजा से भरा था लम्बा-चौडा जंगल। पेड़, पौधे, जड़ी-बूटी और कुछ हिस्से में फसल से सम्पन्न थे हम। हम जो थे वहीं बने रहना चाहते थे। बाहरी दुनिया की स्पर्धा से आँखे मूँद रखी थीं हमने। देवता का भरोसा, तीर-कमान पर गर्व था हमें।'' ३५

इस प्रकार देशकाल वातावरण का चित्रण प्रस्तुत कहानी में हुआ है।

4.16.5 विवेच्य कहानी की भाषा पात्रानुकूल है। प्रसंगानुकूल है। शिक्षित पात्र अंग्रेजी मिश्रित भाषा बोलते हैं। जैसे, ''चुप साले। अभी एन्काउंटर में मार के बिठा

दूँगा।'' ३६ प्रस्तुत कहानी में नाटकीय शैली के साथ-साथ वर्णनात्मक शैली के भी दर्शन होते हैं।

4.16.6 आदिवासी संस्कृति पर महानगरीय संस्कृति का होनेवाला आक्रमण लेखक ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से चित्रित किया है। यही कहानी का उद्देश है।

4.17 'तुम हो'- गोविंद मिश्र

4.17.1 विवेच्य कहानी में दम्पत्ति बिखराव का चित्रण है। कहानी की नायिका सुषमा है। उसका पति रघु शराबी है। दोनों उच्च शिक्षित हैं। लेकिन परस्पर स्नेह न होने के कारण उनका दम्पत्ति जीवन टूट जाता हैं। इनके विवाह विच्छेद की बात न्यायालय में जाती है। सुषमा आत्मनिर्भर बनकर जीवन यापन करती है।

4.17.2 विवेच्य कहानी की नायिका सुषमा है। वह उच्च शिक्षित , शोषित है। उसपर हुए अत्याचार का विरोध में आक्रोश नहीं करती। इसीकारण सुषमा करुणा का पात्र बन जाती है। सुषमा के पति, पिता, सास-ससुर, पुलिस आदि कहानी के गौण पात्र हैं।

4.17.3 विवेच्य कहानी का प्रारंभ संवादों के द्वारा ही हुआ हैं। जैसे -,

''सुषमा ! अपनी अटैची लगा लो। तुम्हें मेरे साथ अभी चलना है, फोरन।''

आदेश, सख्त-सख्त। पिता ने किसी से पूछने की जरुरत नहीं समझी, सास-ससुर किसीसे भी नहीं। उसे सुम्मी भी नहीं कहा ... जिस नाम से वे पुकारते थे। उनका चेहरा दबे हुए क्रोध से खिंचा हुआ था। किसी के कुछ कहने की गुंजाइश नहीं थी, फिर भी उसके ससुर ने ठण्डे-ठण्डे कहा, ''कुछ दिन और देख लेते।''

''देख लिया ... इतने दिनों से देख ही तो रहे हैं।''३७

कहानी के संवाद सार गर्भित है। प्रसंगानुकूल है। जिससे कहानी में आकर्षकता के दर्शन होते हैं।

4.17.4 विवेच्य कहानी में महानगरीय बाध को चित्रित किया है। देशकाल वातावरण निर्मिति के लिए लेखक ने लिखा है, जैसे - ''डावरी एक्ट बडा सख्त है, ससुर और रघु की नौकरी छूट जाएगी, उन्हें जेल होगी। कानून लड़की के पक्ष में है तो यह तो नहीं कि न्याय के लिए संच का गला ही घोंट डाला जाए। उन लोगों को दण्ड दिया जाए जो दूर-दूर तक दोषी नहीं है। पिता कहते हैं, उनके साथ धोखा किया गया है, सुनियोजित ढ़ंग से ... क्या जीवन में सबकुछ सुनियोजित ही होता है, अप्रत्याशित कुछ नहीं ? पिता उन लोगों को दण्ड दिलाने पर उतारु हैं ... क्या उन्हें दण्ड पहले ही।''३८ इस प्रकार देशकाल वातावरण का चित्रण हुआ है।

4.17.5 विवेच्य कहानी में प्रवाहमयी भाषा के दर्शन होते हैं। जिससे कहानी का कथानक तीव्रता के साथ आगे बढता है।

विवेच्य कहानी में कुछ अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे, फिल्म, फ्लॅट, अटैच, बाथरुम, टॅक्सी, नोटिस, कार, फोन, लिस्ट , आयटम, सेट आदि।

विवेच्य कहानी वर्णनात्मक शैली में लिखी गई है।

4.17.6 दहेज के कारण टूटनेवाले परिवार का चित्रण करना विवेच्य कहानी का प्रतिपाद्य रहा है।

4.18 'सरपट' - अवधेश प्रीत

4.18.1 विवेच्य कहानी का नायक चौधरी है। उसके पास घोड़ों का अस्तबल हैं। वह शानदार घोड़े खरीदता रहता है। वह एक गाँव में जाकर तेल के व्यापारी से तेल लेता है। उसके बदले में एक मन अनाज देता है। दोनों में लेन-देन की बातें होती हैं।

4.18.2 विवेच्य कहानी का नायक चौधरी है। उसे घोडों का शौक हैं। उसमें व्यापारी वृत्ति के दर्शन होते हैं। अन्य ग्रामीण पात्र गौण कोटि के अंतर्गत आ जाते हैं।

4.18.3 विवेच्य कहानी में संवादों के दर्शन होते हैं। जिससे कहानी में कौतुहल, जिज्ञासा आदि भाव अपने आप में आ गए हैं। जैसे,

''काबुली घोडा?'' अस्तबल में मौजूद कई चौघरियों के माथे पर बल पड गये। उनमें सबसे बुजुर्ग एक चौधरी ने प्रतिवाद किया, ''हमने तो सुना है, काबुल में घोड़े होते ही नहीं?''

''क्या बात करते हैं हुजूर ?'' तुर्कमीनियाई घोड़े के साईस ने दोनों हाथों की उँगलियाँ दोनों कानों से छआते हुए खुलासा किया, ''काबुल में गधे नही होते। घोडे तो इफरात होते हैं।''

''अच्छा ! '' चौधरियों का अविश्वास अभी भी बरकरार था , ''तुम्हें कैसे मालूम ?''

''हुजूर, लालबाबू के साथ उधर अकसर आना-जाना था।'' साईस ने सफाई दी, ''इसलिए मुझे मालूम है कि वहाँ घोड़े होते हैं और खूब होते है। ''३९

4.18.4 विवेच्य कहानी में ग्रामीण जीवन का चित्रण वहाँ, के परिवेश को उजागर कर देता है। अस्तबल का चित्रण, घोड़ों का वर्णन जिससे कहानी आकर्षक बन गई है।

4.18.5 विवेच्य कहानी में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग हुआ है। जिससे कहानी सुंदर बन पडी हैं। ''खेत खाए गदहा मार खाए जोलहा '' ''खसी की जान गई खाईए को स्वाद नहीं '' इन कहावतों का प्रयोग कहानी में हुआ हैं। ए दिल माँगे मोर,'', ''कर लो दुनिया मुठ्ठी में।'' यह दुरदर्शन पर आनेवाले विज्ञापन भी प्रस्तुत कहानी में दिखाई देते हैं। विवेच्य कहानी में वर्णनात्क शैली के दर्शन होते हैं।

4.18.6 नायक चौधरी के माध्यम से व्यापारी मनोवृत्तियों पर प्रकाश डालना कहानी का प्रतिपाद्य है।

4.19 'घर पहाड़ होता है' – नफीस आफरीदी

4.19.1 विवेच्य कहानी का नायक किरपाल है। वह गरीब है। वह पढ़ना चाहता है। लेकिन आर्थिक विपन्नता के कारण अगली पढ़ाई नहीं कर पाता। वह बेकार है। फलस्वरुप उसके पिताजी उसका तिरस्कार करते हैं। लेकिन अंत में पिताजी का हृदय परिवर्तन होता है। किरपाल वरिष्ठ अधिकारी बनना चाहता है।

4.19.2 विवेच्य कहानी का नायक किरपाल है। वह देहात में रहता है। वह शिक्षा प्रेमी है कई कठिनाइयों के बावजूद वह हार न मानकर अपने जीवन में सफल हो जाता हैं। यही उसके चरित्र की मौलिक विशेषता है। किरपाल के पिताजी, माँ बहन गौण पात्र हैं।

4.19.3 विवेच्य कहानी वर्णनात्मक होने के कारण उसमें संवादों के कम दर्शन होते हैं। लेकिन कहानी में जो संवाद आए हैं उससे कहानी सौंदर्य में वृद्धि हो गई है। जैसे,

-''अब आप पढ़ सकते हो ! मैंने नौकरी कर तो ली है। आपसे कोई कुछ नहीं कहेगा।''

''लेकिन बाऊ ! ..... वह तो ... !'' वह हकला गया। निवाला हलक में अटक गया, तो पानी की घूँट भर कर उसकी तरफ देखने लगा।

''मैं खुद उन्हें समझा दूँगी। पढ़-लिखकर अगर कोई कुछ बनना चाहता है, तो उन्हें क्या परेशानी है ? अब आप उन पर बोझ नहीं बनेंगे। पढ़ाई का सारा खर्चा मेरे जिम्मे।'' ४०

4.19.4 विवेच्य कहानी में भारत के परिवार का चित्रण है। जो देशकाल वातावरण की निर्मिति के लिए सहायक है। जैसे -

''दादू के सिरहाने ही बैठा था किरपाल और सोच रहा था कि मकान-दुकान तो बहुत सुने थे, खेत भी नीलाम हो जाते हैं, यह पहली बार समझ में आया था।

एक अपने भाई, दो भतीजों और एक चवन्नी के पट्टीदार से मुकदमे बाजी ऐसी चली कि बीस बरसों में सब लुट-पिट गया। नोंच-खसोट ने कर्जों तकाजों और देनदारियों के बोझ से इतना लादा कि बचे-खुचे पर कोर्ट ने बंदिशें लगा दी। सर छिपाने को एक घर बचा था, छोटे -बड़े कमरोंवाला।''४१

4.19.5 विवेच्य कहानी चलती-फिरती भाषा में लिखी गई है। कहानी में ऊर्दू, अरबी, फारसी और अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है। जिससे कहानी में रोचकता आई है।

विवेच्य कहानी में नाटकीय शैली के साथ-साथ वर्णनात्मक शैली का सुंदर प्रयोग हुआ है।

4.19.6 आर्थिक विपन्नता कितनी भी क्यों न हो लेकिन उसपर विजय प्राप्त करके शिक्षा प्राप्त करना जीवन की सबसे बडी अनिवार्यता है। इसपक्ष पर कलम चलाना लेखक का प्रतिपाद्य रहा है।

4.20 'उसकी वह अंतिम रेल यात्रा' – संतोष दीक्षित

4.20.1 विवेच्य कहानी की नायिका वृद्धा है। वह अपने जीवन की अंतिम रेलयात्रा कर रही है। वह जिस जमींदार के पास काम करीत है, उसका अपना कोई नहीं है। वह उसे सहायता करती है, जमींदार उसे सहायता करता है। जमींदार वृद्धा को अपनी जायदाद का आधा हिस्सा दे देता है।

4.20.2 विवेच्य कहानी की नायिका वृद्धा है। जिसका नामकरण लेखक ने नहीं किया वृद्धावस्था के कारण उसका शरीर थक गया है। लेकिन दूसरों की सहायता करना उसे अच्छा लगता हैं। उसमें परोपकार के दर्शन होते हैं। वह निस्वार्थी है। यह उसके चरित्र की विशेषता है। जमींदार आदि कहानी के गौण पात्र हैं।

4.20.3 विवेच्य कहानी में परिस्थितिनुकूल, पात्रानुकूल संवाद दिखाई देते हैं।

'जिससे कहानी सुंदर बन पडी है। प्रस्तुत कहानी में संवाद चलती-फिरती भाषा में लिखे गए है। जैसे,

''अच्छा यह सब छोड़ो, पाई क्या वहाँ से ? विदाई में क्या-क्या मिला ?''

''पाती क्या !'' बस खिलाया-पिलाया। मान-आदन से रखा। चलते समय टिकट भी कटवा दिया। ''फिर अचानक जैसे सबसे जरुरी बात याद आ गई हो उसे। याद आते ही किलक उठी -क्या कोई राजा भी हुलसा होगा अपने सामने ताज देखकर।'' ४२

4.20.4 विवेच्य कहानी भारतीय ग्राम जीवन से संबंधित है। फलस्वरुप ग्रामीण परिवेश का चित्रण, वृद्धा की रेल यात्रा का चित्रण सुंदर सजीव लगता है। जैसे, -

''इस वृद्धा के सामने की अकेली सीट पर एक दाढ़ीवाला किसान बैठा था। शक्ल और पहनावे-ओढ़ावे से निश्चित रुप से ठेठ मुसलमान किसान। उसने स्थानीय मगही भाषा में टोका भी उस वृद्धा को, आराम और इत्मीनान से बैठकर यात्रा का लुत्फ लेने के वास्ते। प्रत्युतर में हँस पडी वृद्धा। हँसते-हँसते ही बताया उसने कि अब तो इस कदर चुक्कू- मुक्कू बैठने में ही आराम मिलता है उसे। ''४३

यह वर्णन करते समय पाठक हु-ब-हु प्रस्तुत प्रसंग का आस्वाद लेते हैं।

4.20.5 विवेच्य कहानी में प्रवाहमयी भाषा के दर्शन होते हैं। पात्र अनपढ़ होने के कारण अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग वे इस प्रकार करते हैं जैसे - फोन, टीसन आदि। वर्णनात्मक शैली के साथ-साथ कहानी में संवादात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

4.20.6 दया, परोपकार एवं मानवीय गुणों का दर्शन करा देना विवेच्य कहानी का उद्देश रहा हैं।

4.21 'वह दूसरी' - मृदुला गर्ग

4.21.1 विवेच्य कहानी में पोती अपनी दादी की कहानी सुनाती है। दादा की प्रथम

पत्नी की मृत्यु हो जानेपर दादा दूसरा विवाह करते हैं। दूसरी दादी घर आ जानेपर उसकी तुलना पहली दादी के साथ की जाती है। यही प्रस्तुत कहानी का वर्ण्य - विषय है।

4.21.2 विवेच्य कहानी की दूसरी दादी कहानी की नायिका है। कहानीकार ने जिसका नाम नहीं दिया। वह गरीब घर की है। वह शोषित है। नाचगाने में प्रवीण है। घर में सब लोग उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते। फिर भी दूसरी दादी उनकी सेवा में लगी रहती है। यही उसके चरित्र की सबसे बडी विशेषता है। दादा, पोती तथा अन्य पात्र गौण है।

4.21.3 विवेच्य कहानी के संवाद कथावस्तु को आगे बढ़ाने में सहायक हैं। वजूद, जेहन, फर्श, रियाज, बेसाख्ता, इंतकाम, तमीज, तहजीब, निस्बत आदि शब्द संवादों में आए हैं। जिससे कहानी में रोचकता आई है। कहानी में संवादों के दर्शन होते हैं। जैसे,

''लाइये'', मैंने चित्र वापस लेने को हाथ आगे किया पर उन्होंने झट उसे धोती के पल्लू में लुका लिया। चेहरे पर त्रस्त भाव उभर आया। बोली, ''ना बाऊजी देखेंगे तो टुकडे कर देंगे।''

मैं समझ नहीं पायी, जिसके टुकडे कर देंगे।

''किसी से कहना मत, '' उन्होंने कहा।

''पर ....''

''ले गिरी खा,''.... मुट्ठीभर मग्ज उन्होंने मेरे हाथ में ठूँस दिये। जब तक मैं उन्हें सँभालती, वे चित्र ले, सिरे से गायब हो गयीं।''४४

इस प्रकार विवेच्य कहानी में संवादों के दर्शन होते हैं।

4.21.4 विवेच्य कहानी में कहानीकार ने वातावरण निर्मिति के लिए सुंदर वाक्य

निर्मिति की है। जिससे कहानी में सजीवता आई है। जैसे, -

''मैं ठहरी गरीब घर की लड़की। इकलौती तो क्या। लड़की और गरीब घर की। रण्डियों के मोहल्ले के पिछवाडे, रिहाइंश थी अपनी। शाम ढ़ले उस मोहल्ले में मुजरा जमता तो वह-वह गजल उठान भरती कि सुनो तो गश खा जाओ, दोन-दुनिया की सुध न रहे। एक बात कहूँ बीवी जिठानी जी से न कहियो, पास में मंदिर भी था अपने गरीबखाने के। वहाँ भी शाम-सवेरे कीर्तन हुआ करता था। एक से एक भजन गाये जाते थे।''४५

4.21.5 विवेच्य कहानी में उर्दू, फारसी, अरबी शब्दों का प्रयोग हुआ है। जिससे कहानी में रोचकता निर्माण हो गई है।

कहानी में नाटकीय शैली के साथ-साथ आत्मकथात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

4.21.6 शोषित नारी की वेदना को समाज के सामने रखना कहानी का प्रतिपाद्य रहा है।

4.22 'प्रेम , सपना और मृत्यु' - अजित हर्षे

4.22.1 विवेच्य कहानी का नायक प्राध्यापक है। उसकी पत्नी को भयानक सपने नजर आतें हैं। उसका विश्वास है कि, वह जो सपने में देखती है वास्तविक जीवन में वैसा ही घटित होता है। इस प्रकार नायिका के मानसिक द्वंद्व का चित्रण प्रस्तुत कहानी में चित्रित है।

4.22.2 विवेच्य कहानी की नायिका का नामकरण लेखक ने नहीं किया। वह मानसिक द्वंदव के कारण पीड़ित होने से वह ऐसे सपने देखती है, ऐसा उसके पति का मत है। नायिका का पति, माया आदि कहानी के गौण पात्र हैं।

4.22.3 विवेच्य कहानी मनोवैज्ञानिक आयाम पर प्रकाश डालनेवाली है। फलस्वरुप

ऐसे ही के संवाद कहानी में नजर आते हैं। जैसे, एक दिन सवेरे-सवेरे उसने कहा,

''आज एक अजीब सपना देखा।''

''डरावना या गन्दा ?''

''न डरावना न गन्दा।''

''सुनाओगी नहीं ?''

वह सुनाने लगी, ''सपना तुम्हारे बारे में है। पता नहीं किस काम से तुम एक डॉक्टर के यहाँ बाहर इन्तजार कर रहे हो,,,।''

''किस काम से क्या? किसी बीमारी के कारण या जख्मी होकर।''२६

4.22.4 विवेच्य कहानी में परिवारिक जीवन का चित्रण हुआ है। लेखक ने ऐसा ही वातावरण निर्माण करने का सफल प्रयास किया है। जैसे,

''आज बडा गन्दा सपना देखा। मैं समझ जाता हूँ,आज उसके सपने में चार-छः काले भुजंग आये होंगे अपनी लचकदार मगर कठोर मांसपेशियों के बीच उसे दबोचा होगा, नोचा-खसोटा होगा, लहूलुहान कर दिया होगा। मैं समाजशास्त्र का प्राध्यापक हूँ, पर मेरी मनोविज्ञान में गहरी रुचि है। मैं उसे बताता रहता हूँ, सपने-सपने होते हैं, वास्तविकता से उनका कोई ताल्लूक नहीं होता। वह पूछती है - पर हमेशा खराब सपने की क्यों आते हैं, तो मैं उसे समझाता हूँ - डर ! स्त्रियों, खासकर भारतीय स्त्रियों के सारे व्यवहार असुरक्षा की भावना से ही परिचालित होते हैं। कोई स्त्री देखने में कितनी ही सुखी, सन्तुष्ट, सुरक्षित, बेफिक्र और बिन्दास क्यों न लगे उसकी चेतना की पतों के बीच एहसास से परे एक अजाना, अदृश्य डर हमेशा बना रहता है।''४७

4.22.5 विवेच्य कहानी के पूर्वार्ध में लघु,चुस्त वाक्यों के दर्शन होते हैं। जिससे भाषा में गति आ गई है। कहानी में वर्णनात्मक शैली के साथ-साथ नाटकीय शैली

का सुंदर समन्वय पाया जाता हैं।

4.22.6 लेखक ने कहानी का उद्‌देश्य प्रतिपादित करते हुए लिखा है, - ''सपने सपने होते हैं, वास्तविकता से उनका कोई ताल्लुक नहीं होता।'' यही विचार पाठकों के सामने रखने की कोशिश की गई है।

4.23 'मेरे अपने'- उषाराजे सक्सेना

4.23.1 विवेच्य कहानी की नायिका एला है। वह पितृ प्रेम से वंचित है। लंबे अंतराल के बाद वह अपने पिता से मिलने के लिए उतावली हो जाती है। उसका प्रेमी मिर्चा है। उसके साथ वह विवाह करना चाहती है। पिता के अनुरोध पर वह उनके घर जाती है,लेकिन उसका मन वहाँपर नहीं रमता। अंत मं वह अपने घर वापस आती है।

4.23.2 विवेच्य कहानी की नायिका एला स्वतंत्र जीवन जीनेवाली लड़की है। वह एकनिष्ठ प्रेमिका है। पितृ प्रेम से वह वंचित है। वह स्वाभिमानी है। उसका प्रेमी मिर्चा और एला के पिता कहानी के गौण पात्र हैं।

4.23.3 विवेच्य कहानी के संवाद पात्रानुकूल, परिस्थितिनुकूल नजर आते है। जो कथावस्तु को आगे बढ़ाने के लिए सहायक हैं। जैसे, ''जिन्दगी भर मैं यही कोशिश करती रही कि मैं ही तुम्हारे जीवन की केंद्र-बिन्दु बनी रहूँ। तुम्हें पाने के लिए ही मैं तुमसे लड़ती रही। मैं नही चाहती हूँ कि मैं मिर्चा के व्यक्तित्व में जीवन भर तुम्हें खोजती रहूँ।''

''मुझे नहीं मालूम था, कि तुम पर मेरे व्यक्तित्व का इतना असर है।''

''क्यों नहीं होगा! तुम मेरे पिता नहीं थे क्या ? ''

''था क्यों ? हूँ नहीं क्या ? '' ४९

4.23.4 विवेच्य कहानी में आधुनिक जीवन का प्रतिबिंब है। फलस्वरुप प्रस्तुत कहानी में आधुनिक वातावरण की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। जैसे, ''मुझे मालूम है

तुमने मुझे खोजने की कोई कोशिश नहीं की, वर्ना तुम मेरे दोस्तों से मेरा पता पूछ सकते थे। इण्टरेनेट से मेरे-ई-मेल का पता खोज सकते थे। नहीं ! तुम्हें तो अपने व्यापार के आगे किसी का खयाल ही नहीं रहता है। तुम बला के स्वार्थी हो। कम-से-कम जीवन में एक बार तो इस कडवे सच को स्वीकार कर लो।'' ५०

4.23.5 विवेच्य कहानी में प्रवाहमयी भाषा के दर्शन होते हैं। भावपूर्ण स्थलों पर भाषा अत्यंत भावूक हो गई हैं। जिससे कहानी भाषा की दृष्टि से सुंदर बन गई है।

वर्णनात्मक शैली के साथ-साथ नाटकीय शैली के दर्शन भी प्रस्तुत कहानी में होते हैं।

4.23.6 पितृ प्रेम से वंचित बेटी की पुकार को समाज तक पहुँचाना यही कहानी का प्रतिपाद्य रहा हैं।

4.24 'मन मोबाईल' – राजेश जैन

4.24.1 विवेच्य कहानी के नायक नामकरण कहानीकार ने नहीं किया। नायक महानगर में रहनेवाला है। वह अपने ऑफिस के लिए जिस सड़क से यातायात करता है। वहाँ का चित्रण प्रस्तुत कहानी में है।

4.24.2 विवेच्य कहानी का नायक संवेदनशील, भावुक, सहृदयशील है। सड़कों की, वृक्षों की दयनीय अवस्था देखकर उसका मन पिघल जाता है। यही उसके चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता है। नायक का मित्र, आदि गौण पात्र है।

4.24.3 विवेच्य कहानी में एक दो स्थलों पर संवादों के दर्शन होते हैं। जो कथावस्तु को आगे बढ़ाने में सहायक रहे हैं। जैसे

''आप छोटावाला बेवी ब्रश इस्तेमाल करके देखें ... शायद फायदा हो।''

'इस उम्र में और बेबी ब्रश ...।' उसे आश्चर्य हुआ। 'कोशिश करने में क्या हर्ज ?

' 'सच एक उम्र के बाद बुढ़ापा बचपन की ओर लौटने लगता है... सो मैं भी।'' ५१

4.24.4 विवेच्य कहानी में कहानीकार ने सुंदर शब्दों की आयोजना की है। जिससे वातावरण निर्मिति सुंदर ढंग से हो गई हैं। जैसे, ''दिल्ली शहर की सड़कों पर अनिल ने कई दुर्घटनाग्रस्त वाहन और व्यक्ति देखे थे। थोडी देर के लिए वह ठिठक जाता, चेतना स्तब्ध हो जाती ! दफ्तर जाने समय कभी देखता कि पूरा का पूरा ट्रक सडक के डिवाइडर में धँसा पडा है, कोई कार पलटी पडी है। एक बार तो वह यह देखकर दहल गया कि सामने से आती बस ने ऑटोरिक्शा को टक्कर मार कर गेंद की तरह उछाल दिया।''५२

4.24.5 विवेच्य कहानी का शीर्षक ही पाठकों को आकर्षित करता हैं। कहानी में ऑटो रिक्षा, फुटबॉल, हेल्मेट, हॅलो, थयोरी, इंटरनेट, सिग्नल, टि.व्ही. टेलीफोन, मल्टीमिडिया, मोटर सायकल, एक्सीडेंट आदि कई अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है।

कहानी में नाटकीय शैली के साथ-साथ विवरणात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

4.24.6 सड़कों की दुरावस्था का चित्रण प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने समाज के सामने रखा हैं। यही कहानी का प्रतिपाद्य है।

4.25 'रात में सागर' – चंद्रकांता

4.25.1 विवेच्य कहानी की नायिका अपाहिज है। उसके बेटे और बहू नौकरी करते हैं। जिसकी वजह से बीमार नायिका की ओर ध्यान देने के लिए किसी के पास समय नहीं है। इसलिए उसे अस्पताल में रखा जाता हैं। वह अपने घर में रहना पसंद करती है।लेकिन उसके बेटे उसे अस्पताल में ही रखते है। जिससे नायिका त्रस्त रहती है।

4.25.2 विवेच्य कहानी की नायिका का नामकरण कहानीकार ने नहीं किया है। वह

संतान प्रेमी है। वह प्यार की भूखी है। अतएव अपने परिवार में रहना चाहती है। उसके बेटे स्वार्थी है। जो अपनी जन्मदात्री माँ को भूल गये है। दो बेटे और उनकी पत्नियाँ आदि गौण पात्र हैं।

4.25.3 विवेच्य कहानी में लघु, चुस्त, आकर्षक, संवादों की निर्मिति हुई है। जिससे कहानी तीव्रता के साथ आगे बढ़ती हैं। कहानी में संवादों के दर्शन इसप्रकार होते हैं। जैसे, -

''मेरी माँ बीमार थीं, उन्हें सेनिटयोरिटम में रखा गया था। मरने-मरने को थीं, पर उन्होंने प्राण जैसे मुट्ठी में बन्द कर रखे थे। कष्ट बहुत था, पर कहती थीं, जब तक घर नहीं ले जाओगे, प्राण नहीं त्यागूँगी। और जब घर ले आये तो ऐसी गाढ़ी नींद सोई कि दूसरे दिन उठी ही नहीं।''

'और विदा-बेला में कहा गया उनका आखिरी वाक्य - 'अब ये दूरियाँ सही नहीं जातीं।'' ५३

4.25.4 विवेच्य कहानी की कथाभूमि भारत तथा विदेश से संबंधित है। फलस्वरुप वहाँ के वातावरण का चित्रण कहानी में लगाव के साथ चित्रित हुआ है। जैसे,

''वे अब घर लौट रहे है, श्रेया और धीरेन्द्र। सिंगापुर एयरलाइन्स की बोइंग सेवन नॉट सेवन से। एक महीना पहले इसी विमान से वे भारत से लॉस एंजिल्स आये थे, माँ से मिलने। तब हवा में कलाबाजियों के बीच, आकाशी मार्ग की ऊँचाइयाँ और धरती से मीलों मील दूरियाँ थीं। लौटते में अब सागर की गर्जन भी साथ चल रही है।''५४

4.25.5 विवेच्य कहानी के पात्र उच्च शिक्षित होने के कारण कहानी की भाषा में अंग्रेजी शब्दों की भरमार दिखाई देती है, जो पात्रानुकूल है। जैसे, सिंगापुर, एअरलाइन्स, सेवन नॉट सेवन, आय लव्ह यू, ग्राउण्ड फ्लोअर, चेकअप्स, डॉक्टर,

फीस आदि। जिससे कहानी में रोचकता आई हैं।

कहानी में संवादात्मक शैली के साथ-साथ वर्णनात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

4.25.6 भूमंडलीकरण के कारण आज संतान अपनी जन्मदात्री माँ को भूल रहे है। इस पक्ष पर प्रकाश डालना कहानीकार का उद्देश्य है।

4.26 'धूल की एक परत ' – तरुण भटनागर

4.26.1 विवेच्य कहानी क नायक का नामकरण कहानीकार ने नहीं किया है। कहानी ऐतिहासिक कल्पना प्रधान है। नायक रेस्ट हाउस में रहता है। विधवा रानी अपने महल में नायक को आमंत्रित करती है। नायक महल की दुरावस्था देखकर, चिंतित हो जाता है। रानी आर्थिक विपन्नता का सामना करते हुए आत्मनिर्भर बन जाती है।

4.26.2 विवेच्य कहानी के नायक में सेवा भाव, परोपकार के दर्शन होते हैं। जब राजा-रानी जीवित थे, तब अमीर थे। लेकिन, राजा की मृत्यु हो जाने के बाद रानी आर्थिक उलझन में पड जाती है। यही उसके चरित्र की विशेषता हैं। हरि तथा अन्य पात्र गौण पात्र हैं।

4.26.3 विवेच्य कहानी में संवाद पात्रानुकूल है। परिस्थितिनुकूल है। जिससे कथावस्तु आगे बढ़ती है। जैसे,

''आज मुझे बात करनी है।''

उसका स्वर कुछ तेज था।

''इइइ..... धीरे, साहब बैठे हैं।''

''कौन साहब ?''

''धिरे, बडे साहब है।''

''ठीक है, ठीक है, पर बता दो तुम्हारी रानी साहेब को, जब किराये का पूरा पैसा

देते हैं, तो बिजली का बिल क्यों नहीं पटता ? '' उसने चीखते हुए कहा।'' ५५

4.26.4 विवेच्य कहानी का वातावरण अपने कथ्य को स्पष्ट करने में सफल दिखाई देता है। जैसे, ''ड्राइंग रुम का एक विशाल हॉल थो, जिसकी छत बहुत ऊँची थी। इतनी ऊँची कि पेट्रोमैक्स की लाईट वहाँ तक नहीं पहुँच पा रही थी। हॉल के पीछे, हॉल से जुडा एक लम्बा गलियारा था। ऊँचे मेहराबदार दरवाजे और उनमें लटकते पर्दे हॉल को गलियारों से अलग करते थे। रानीली के पर्दे कुछ जगहों से फट गये थे और कहीं-कहीं से उनकी सुनहरी किनारी उधडकर लटक गई थी। पर्दों की सिलवटों के बीच ऊपर से नीचे तक धूल की हल्की परत जम गई थी, जो पेट्रोमैक्स की रोशनी में चमक रही थी। जहाँ मैं बैठा था, उसके ठीक सामने वाली दीवार पर एक खूबसूरत अतिशदान बना था, जिसके चारों ओर पीतल गढकर कार्विंग -सी की गई थी। अतिशदान के ऊपर वाघ की भूसा भरी खाल को लकड़ी के स्टैण्ड पर कसकर दीवार पर लगा दिया गया था। ''५६

4.26.5 विवेच्य कहानी अंग्रेज कालीन इतिहास कल्पना प्रधान होने के कारण प्रस्तुत कहानी की भाषा में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग बडे पैमाने पर हुआ है। जिससे कहानी आकर्षक बन गई है। जैसे, -

रेस्ट हाउस , रोड, बाउंड्री , लॉन, पैंट, लाइट, ऑन, पब्लिक डिलिंग , स्टेट, पॉलिटिकल एजेंट, गार्ड आदि।

विवेच्य कहानी में नाटकीय शैली के साथ-साथ विवरणात्मक शैली का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

4.26.6 राजा द्वारा जनता के लिए किए गए विकासात्मक कार्य पर प्रकाश डालना कहानी का उद्देश हैं।

4.27 'धोबी का कुत्ता' – कृष्ण बिहारी

4.27.1 विवेच्य कहानी का नायक अवधेश है। उसका मित्र रघुवीर है। यह दोनों नौकरी के लिए विदेश जाते हैं। उन्हें वहाँ पर बहलाकर, फुसलाकर स्पॉन्सर ले जाता है और वहाँ जानेपर उनका शोषण करता है। इसी शोषण का दयनीय चित्रण कहानीकार ने विवेच्य कहानी में चित्रित किया है।

4.27.2 विवेच्य कहानी का नायक रघुवीर परिश्रमी है, जिद्दी है, मित्र प्रेमी है, ईमानदार है, अड़ीग है। यह उसके चरित्र की विशेषता है। अवधेश, स्पान्सर , पुलिस आदि पात्र गौण है।

4.27.3 विवेच्य कहानी का वर्ण्य-विषय विदेश से संबंधित होने के कारण कहानी में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग अधिक पैमाने पर हुआ है। जैसे, मॉन्युरी कंडिशन, हॉल,बॉक्स, एजंट, डॉक्टर, स्पान्सर आदि। लेखक ने कुछ कठिण शब्दों के अर्थ कोष्टक में दिए है। जैसे मिसकीनों (गरीबों) उर्दन (जार्डन) मुखालफा (जुरमाना) आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ हैं। कहानी में संवाद लघु , चुस्त दिखाई देते है। जैसे,

''एक सिपाही ने कहा, '' शराब पिया .. आदमी...?''

''नहीं ... वो शराब नहीं पीता था। ''

''लेकिन ..... वो तो हिन्दू... हिन्दू तो शराब पीता।''

''पीने को तो मुसलमान भी शराब पीते हैं, तो ... ?''

''तुम दोनों इतना सवेरे लांड्री में क्यों आया ?''

''रात में काम ज्यादा था। पूरा नहीं हुआ ... कस्टमर को देने का वायदा था .... इसलिए हम दोनों जल्दी आये। '' ५७

4.27.4 विवेच्य कहानी में उत्तर प्रदेश के उन्नाव जनपद का और विदेश का चित्रण वातावरण निर्मिति को साकार बनाता है।

4.27.5 विवेच्य कहानी की भाषा, पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल दिखाई देती है। अंग्रेजी के साथ-साथ उर्दू के शब्दों का प्रयोग भी कहानी में दिखाई देता है।

वर्णनात्मक शैली के साथ-साथ कहानी में संवादात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

4.27.6 भारतीय मजदूरों के विदेश में होनेवाले शोषण पर कहानीकार ने प्रकाश डाला हैं। यही विवेच्य कहानी का प्रतिपाद्य है।

4.28 'शहर'- चित्रा मुद्गल

4.28.1 विवेच्य कहानी आँचलिक कहानी है। प्रस्तुत कहानी में कोई प्रमुख पात्र नजर नहीं आता। गाँवमें मंदिर के ईर्द-गिर्द कथावस्तु घूमती रहती है। मंदिरों के पास बैठनेवाले भिखारी वहाँपर आते हैं।

4.28.2 विवेच्य कहानी का नायक शहर है। भिखारियों से त्रस्त, वातावरण में शहर का चित्रण कहानी में आया हैं।

4.28.3 विवेच्य कहानी के संवाद आकर्षक, लघु, चुस्त हैं। जिससे कहानी सुंदर बन पडी है। जैसे, ''सीढ़ियों पर जमे मँगतों की जमात की जीभ पानिया आयी - '' किस्मत वाले हो भाई ! '' किस्मत तुम्हारी भी जाग सकती है। ''

''सो कैसे ?''

''हमारे साथ हमारे यहाँ चलो। ''

''कैसे जा सकते हैं !'' उनकी आह फूटी।

''गाडी में बैठ के। ''

''पल्ले पैसा न कौड़ी किराया कहाँ से लाएँगे ?''

''जोडी गाँठी जमा पूँजी कुछ तो होगी ! ''

''.....''

''बोलें, कुछ तो होगी !''

''थोडी बहुत। ''सभी के मुँह से निकला। '' ५८

4.28.4 विवेच्य कहानी का वातावरण एक शहर का है। जिसपर प्रकाश डालते हुए लेखक ने लिखा है, जैसे -

''लँगड़े शहर ने देखा , गाँव से लगभग सिर उठाये खडी छोटी-सी पहाड़ी के ऊपर दुर्गा माता का छोटासा मंदिर है। सीढ़ियाँ आरम्भ होने से पहले मेहराबदार एक मण्डप-सा बना हुआ है। मण्ड़प के ऊपर लिखा है - 'दुर्गा माता का अति प्राचीन मंदिर। ' गहरे रंगों से रँगी मंदिर की भीतियों को देखकर यही अनुमान हुआ - मंदिर की प्राचीनता बारह - तेरह वर्षों से अधिक नहीं। '' ५९

4.28.5 विवेच्य कहानी में प्रवाहमयी भाषा के दर्शन होते हैं। कहानी में नाटकीय शैली का प्रयोग हुआ है।

4.28.6 शहर में व्याप्त भिखारियों की समस्या पर प्रकाश डालना कहानी का उद्देश रहा हैं।

4.29 'सहसा एक बूँद उछली' - उर्मिला शिरीष

4.29.1 विवेच्य कहानी की नायिका डॉ. काचरु है। वह मेडिकल कॉलेज में टीचर है। वह विधवा है। डॉ. काचरु को एक विकलांग पोती है। उसके साथ डॉ. काचरु का एक दूर का रिश्तेदार अवैध संबंध रखता है। जिससे वह गर्भवती बन जाती है। जिससे काचरु चिंतित हैं।

4.29.2 विवेच्य कहानी की नायिका डॉ. काचरु है। वह उच्च शिक्षित है, विधवा है, आत्मनिर्भर है। यह उसके चरित्र की प्रमुख विशेषता हैं। मिनी बेटी, विकलांग पोती तथा अन्य पात्र गौण हैं।

4.29.3 विवेच्य कहानी के संवाद पात्रानुकूल है, प्रसंगानुकूल है। कहानी का प्रारंभ ही नाटकीय ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। कहानी के संवाद उत्सुकता जगानेवाले हैं। जैसे,

''राजेश को फोन कर दिया ? '' उनके पुन: आने पर मिनी ने पूछा।

''वे लोग कल सुबह तक पहुँच जाएँगे।''

''वहाँ सभी लोग खुश हैं ? '' मिनी ने चहकते हुए पूछा।

''हाँ - हाँ, क्यों नहीं ... !''

''मम्मा, पण्डितजी को समय लिखवा दिया .... आपने समय तो सही नोट किया था ... ?''

''एकदम सही समय नोट किया है बेटी ...।'' ६०

4.29.4 विवेच्य कहानी में महानगरीय बोध का चित्रण दिखाई देता है। फलस्वरुप महानगरीय वातावरण की अभिव्यक्ति करनेवाले खंड़ चित्र विवेच्य कहानी में नजर आते हैं।

4.29.5 विवेच्य कहानी की भाषा सरस, गंभीर, भावपूर्ण रही है। भाषा में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग नजर आता है। जैसे मेडिकल , टीचर्स, कॅप्ट, एक्सिडेंट, प्रोफेशन, इंजीनियर, स्लीपर, जर्नलिज्म, डिलीव्हरी आदि।

विवेच्य कहानी में संवादात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

4.29.6 परित्यक्ता समस्या,विधवा समस्या, महानगरीय समस्या आदि समस्याओं पर प्रकाश डालना विवेच्य कहानी का उद्देश हैं।

4.30 'एक चिड़िया का शोकगीत' – सेराज खान '' बातिश''

4.30.1 विवेच्य कहानी के नायक का नामकरण कहानीकार ने नहीं किया। प्रस्तुत कहानी में नायक का पंछी प्रेम दिखाई देता है। पंछियों को पिंजड़े में बंद करना

उचित नहीं हैं। यह बात कहानीकार ने कहानी में सुंदरता के साथ प्रस्तुत की है।

4.30.2 विवेच्य कहानी के नायक का प्रकृति प्रेम, पंछी प्रेम नायक के चरित्र की सबसे बडी विशेषता है।

4.30.3 विवेच्य कहानी में पात्रानुकूल, संवादों की निर्मिति हुई है। जैसे,

''मैंने मन - ही - मन सोचा अजीब हैं कलकत्ता के ये मिटिया बुर्ज वाले। सभी अपने को लखनऊ और वाजिद अलीशाह से ही जोडते हैं।''

परिंद फरोश थोडा रुककर फिर बोला - ''... वैसे कुछ लोग तो पूरा पिंजरा खरीदकर परिंदों को आजाद कर देते हैं ... हाँ , ये बड़े नाजुक परिन्दे होते हैं, प्याार से पालिए। बच्चों का शौक है, लोग तो बच्चों के लिए ही खरीदते हैं ...। ''६१

4.30.4 विवेच्य कहानी में वातावरण निर्मिति के लिए सुंदर शब्द चित्रों का निर्माण किया हैं। जिससे पाठक प्रभावित हो जाते हैं। जैसे, -

''महीना बीतने लगा किन्तु वह पहाडी गौरे या पिंजरे का अभयस्त नहीं हो पाया था। वह उदास और बेचैन पिंजरे से लडता रहा। आकाश और नीम के पेड़ को देखता रहा। नीम के पेड़ से मैना बुलबुल और तोते की आवाज सुनकर वह फड़फड़ाता हुआ उड़-भागने की चेष्टा करता रहा। उसके इस संघर्ष और बेचैनी को देख मुझे खुद भी हैरत और हैरानी होती। कभी-कभी दया भी आती। फिर सोचता, दाम देकर खरीदा है, वैसे भी इन्हें कष्ट तो नहीं है।'' ६२ इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में वातावरण निर्मिति का निर्वाह हुआ है।

4.30.5 विवेच्य कहानी की भाषा प्रसंगानुकूल है, संक्षिप्त सारगर्भित है और मानव जीवन के दर्शन को अभिव्यक्त करनेवाली है। जैसे,

''.... वह अकेला पंछी निरन्तर अपनी कोशिशों में आजादी को साधे रहा। उसकी आजादी की बेचैनी, लगन और संघर्ष, तनुकाया को देख गाँधीजी की याद हो आती

....''

जिस तरह गाँधी जैसे साधारण व्यक्ति में अँग्रेजों ने आजादी जैसे महान कार्य के संकल्प को व्यर्थ सोचा थ, वैसे ही मैं उस नन्ही जान को लोहे के पिंजरे से - आजाद होने के संघर्ष को असम्भव सोच रहा था।''६३

विवेच्य कहानी वर्णनात्मक शैली में लिखी गई है।

4.30.6 नायक के प्रकृति प्रेम तथा पंछी प्रेम पर प्रकाश डालना कहानीकार का प्रमुख उद्देश है।

4.31 'भुरमुंड़ा' - जय शंकर

4.31.1 विवेच्य कहानी आदिवासी जन-जीवन पर आधारित है। भुरमुंडा एक गाँव का नाम है। वहाँ के रीति-रिवाज , त्यौहार-संस्कार, आदि पक्षों पर लेखक ने कहानी के माध्यम से प्रकाश डाला हैं।

4.31.2 विवेच्य कहानी की नायिका सांवली है। वह अथक परिश्रम करती है। वह अंधविश्वासी है। वह अपने प्रेमीसे विवाह नहीं कर सकती। हमेशा उसकी यादों में खो जाती हैं। यह उसके चरित्र की विशेषता है। कहानी के अन्य पात्र गौण है।

4.31.3 विवेच्य कहानी में लघु , आकर्षक, चुस्त, संवादों के दर्शन जगह-जगह पर होते हैं। जिससे कहानी नाटकीय लगती है। उदा -

''मेरा मन वहाँ से पाण्डिचेरी जाने का रहेगा।''

''क्या मैं तुम लोगों के साथ चल सकती हूँ ?''

''तुम्हारे बाबा नहीं मानेंगे।''

''अगर मान गए तो ....''

''पता नहीं बुआ और छोटी क्या सोचेंगी !''

''तुम डरते हो ?''

''हाँ।''

''किससे ?''

''यह पता नहीं लेकिन डरता जरुर हूँ।''६४

4.31.4 विवेच्य कहानी में कहानीकार ने वातावरण निर्माण का सुंदर प्रयास किया है। कहानी पढ़ते समय यह दृश्य पाठकों के आँखों के सामने नाचने लगते हैं। जैसे,

''तालाब के किनारे मछली पकड़ने के लिए बैठे लोगों के बीच बैठा रहता हैं। तालाब पुराना है। आम के पेड़ों से घिरा हुआ है। वहीं शिवलिंग की पूजा होती है और उसके पास में ही किसी पीर की मजार भी है। मैं वहाँ कभी नहीं गई। भुरमुंड़ा नाम की उस जगह के बारे में मैं जितना भी जानती हूँ, वह सब मुझे उसी ने बताया है।''६५

4.31.5 विवेच्य कहानी में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग हुआ है। कहानी का शीर्षक ही गाँव नाम से संबंधित है। कहानी में कुछ अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग नजर आता हैं। जैसे, स्कूल, क्रॉस, जज, एक्सिडेंट, ऑफकोर्स आदि। कहानी में संवादात्मक शैली के दर्शन होते है।

4.31.6 आदिवासी जीवन के विविध पहलूओं का पाठकों से परिचय करा देना कहानी का प्रतिपाद्य रहा हैं।

4.32 'ग्रहण' – रमा सिंह

4.32.1 विवेच्य कहानी की नायिका वसुंधरा है। वह बाल विधवा है। वह सुमन के घर उसके अविकसित बेटे की शुश्रुषा करने के लिए उसके घर पर रहती है। वह उस अविकसित बेटे के साथ अवैध संबंध रखती है। जिससे वह गर्भवती बन जाती है। वसुंधरा बिना बताए उसका घर छोड देती है और अपनी अवैध संतान को जन्म देकर उसकी परवरिश करती है।

4.32.2 विवेच्य कहानी की नायिका वसुंधरा बाल-विधवा है। जिसके कारण वह उपेक्षा का कारण बनती है। वसुंधरा घर की नौकरानी है। वह जिद्दी है, यह उसके चरित्र की महत्त्वपूर्ण विशेषता हैं। सुमन, उसका पति आदि गौण पात्र हैं।

4.32.3 विवेच्य कहानी की नायिका वसुंधरा बंगाली भाषी है। फलस्वरुप कहानीकार ने बंगाली भाषा के कई वाक्यांशों का प्रयोग कहानी में किया हैं। कोष्टक में उसका हिंदी में अर्थ दिया है। जिससे कहानी रोचक बनी है , जैसे -

''आमार मेयेर लज्जा एवं धर्म रक्षा करा आपना देर कर्तव्य। आमार मेयेर लज्जा एवं धर्मेर ऊपर कोनो रकम आँच ना आसे सेदिके आपनारा ध्यान देवेन। ''(हमारी बेटी की इज्जत और धर्म के रक्षक आप लोग हुए। उसके धर्म और इज्जत पर कभी आँच नहीं आवे, इसका आप लोग खयाल रखेंगे।)''६६

''ना, ये टा आमार भाई नय, आमार भगोवान आछे, बाल गोपाल, ''(नहीं, यह मेरा भाई नहीं हैं , मेरा भगवान है, बाल गोपाल है)।

''बाबा केमोन आछेन ?'' (पिताजी कैसे है ?)। ''६७

4.32.4 विवेच्य कहानी में कहानीकार ने प्रस्तुत कहानी में वातावरण निर्मिति के लिए संक्षिप्त, सुंदर भाषा का प्रयोग किया हैं। जैसे,

''वर्षों पहले की बात है। तब उसका तबादला बंगाल राज्य के पुरुलिया जिले की एक ग्रामीण शाखा में हो गया था। वह एल.आई.सी. का दफ्तर था जहाँ महिलाएँ थीं, पुरुष थे। एक दिन सौरभ मुखर्जी अपने एल.आय.सी. के काम से आया हुआ था। सौरभ उस दफ्तर में अकसर आता था। वह अधेड़ उम्र, नाटे कद-काठी का, एक हँसमुख आदमी था जिसके सामने से सिर के बाल सफाचट थे।

एक दिन उसी ने सुनायी थी , वसुंधरा की कहानी। कहानी सुनाते हुए उसने कहा था कि यदि कोई इस बाल विधवा को अपने घर रख ले तो उसका भी और उस बाल

विधवा का भी कल्याण हो जाएगा। ''६८

4.32.5 विवेच्य कहानी में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग हुआ है। मुखर्जी, वसुंधरा की बंगाली भाषा पाठकों को व्यवधान नहीं लगती।

कहानी वर्णनात्मक शैली में लिखी गई है।

4.32.6 बाल-विवाह की समस्या, अविकसित बेटे की समस्या, अवैध संतान की समस्या पर प्रकाश डालना विवेच्य कहानी का उद्देश्य रहा है।

4.33 'अपदस्थ'- जयनंदन

4.33.1 विवेच्य कहानी की नायिका भूमिका है। उसके पति का नाम आमिष है। वह सीधा-साधा भोला-भाला हैं। उसके यह जीने की स्टाईल उसकी पत्नी को अच्छी नहीं लगती। इसलिए वह अपने बेटे निपुण को लेकर अपने प्रेमी सुमित के घर रहने जाती है। जिससे उनका परिवार टूट जाता है।

4.33.2 विवेच्य कहानी के नायक का व्यक्तित्व सीधा-साधा, भोला-भाला है। वह शॉपिंग क्लब पार्टी से दूर रहनेवाला परित्यक्त पुरुष है। उसकी पत्नी भोगवादी जीवन जीनेवाली नारी है। सुमित, निपुण यह पात्र गौण हैं।

4.33.3 विवेच्य कहानी में संवाद पात्रानुकूल है, प्रसंगानुकूल है। जिससे कहानी विकास की ओर जाती है। जैसे,

''मम्मी की बात माननी चाहिए बेटे।'' इसके सिवा भला वह क्या जवाब दे सकता था ?

''क्या सबकी मम्मी इस तरह पापा बदल देती है ?''

''इसका जवाब मुझे नहीं आता, तुम मम्मी से ही पूछना।''

''डाँट दिया तो तुम्हें समझ लेना चाहिए कि यह सवाल ठीक नहीं है।''

''लेकिन मुझे आपके साथ रहना है।''

''मैं मिलने आया करूँगा तुमसे ?''

''प्रॉमिस ?''

''हाँ प्रॉमिस।''६९

4.33.4 लेखक ने विवेच्य कहानी के अंतर्गत पारिवारिक तनाव का चित्रण बडे लगाव के साथ प्रस्तुत किया है। जैसे, -

''अत्याचार जिस पर हो रहा है, अत्याचार करनेवाला उसे ही अत्याचारी बता रहा है। इस अन्तर्विरोध पर आमिष की आत्मा विलाप कर उठी थी और वह सबके सामने अपना सिर फोड लेना चाहता था। मगर उसे तो अभिनय करना था .... अपने परिवार के नजरों में भूमिका नेक बनी रहे, इसका आधार तैयार करने में मदद कर देती थी। अब उसे इनकी निगाह में अपनी छवि की परवाह करने की कोई तुक नहीं थी, चूँकि भूमिका से उसका कोई रिश्ता ही नहीं रहना था, इसलिए दोबारा यहाँ आने का भी कोई सवाल नहीं था।'' ७०

4.33.5 विवेच्य कहानी की भाषा प्रवाहमयी है। बेटे निपुण की भाषा बाल-सुलभ है। जिसपर मनोवैज्ञानिकता का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। कहानी में पूर्व दीप्ति शैली का प्रयोग हुआ है।

4.33.6 दाम्पत्य जीवन में आए बिखराव का चित्रण करना विवेच्य कहानी का उद्देश्य है।

4.34 'ड़ेक पर अँधेरा' – हीरालाल नागर

4.34.1 विवेच्य कहानी का नायक संजय चौगालिया है। नायक अपने सैनिक साथियों के साथ भारतीय शांति सेना के दल से जाफना जा रहा हैं। वहाँ की लड़ाई का चित्रण प्रस्तुत कहानी में आया है।

4.34.2 विवेच्य कहानी का नायक संजय चौगालिया देशप्रेमी है। घर से दूर रहने पर

वह अपने परिवारजनों की यादों में खो जाता हैं। हवलदार भाखरा, पांडे गौण पात्र हैं।

4.34.3 विवेच्य कहानी में पात्रानुकूल संवाद दिखाई देते हैं। जिससे कहानी आकर्षक बन पडी है। जैसे,

''एम.एल. भाखरा ने आवाज दी - संजय, चाय पीओ।''

''उल्टियॉ तो नहीं हुई ? गरुड का सवाल मुझसे था।''

''नहीं तो ! अभी तक मुझे मितली भी नहीं आई।'' मैंने कहा।

''रंगरुटों का बुरा हाल है।'' वह बोला और उसने मुझे हिदायत दी - ''खाना मत खाना। इस आफत से बचने का यह सबसे सस्ता और सरल उपाय है।''७१

4.34.4 विवेच्य कहानी में युद्ध के परिवेश का चित्रण में आया है। जैसे,

''बरसती गोलियों में उसने टेलीफोन के तार बिछाए हैं। रात में भागते और जागते हुए। वह उस समय से हमारे साथ है, जब से शान्ति-सेना ने इस धरती पर कदम रखे हैं। लड़ाई तो विवशता में लड़नी पडी। भाखरा के पास हौसला है और आदमी के साथ रहने की तमीज भी। संकट के दिनों में जब जाफना के बाजार बन्द थे या जवानों को बाजार जाने की मनाही थी और लोग बीड़ी के एक-एक टोंटे के लिए तरसते थे उस समय एम.एल. भाखरा हमें बताता था कि इनसान को मुसीबत किस तरह जीना सिखाती है मुसीबत कब कहाँ से टपक पडे, किसी को नहीं मालूम। यह पाठ जरुरी है, इस आड़ी-तिरछी जिन्दगी के लिए।''७२

4.34.5 विवेच्य कहानी की भाषा प्रवाहमयी है। कहानी में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है ।जैसे ट्रांझिट, कैम्प, गेट, करंट , लिस्ट, इनचार्ज, ऑफिसर, इन्जॉय, नेवी, मशिनगन, कमांडर आदि। जिससे कहानी में रोचकता आ गई है। कहानी वर्णनात्मक शैली में लिखी गई है।

4.34.6 देशप्रेमी जवानों की वीरता का चित्रण करना कहानी का मुख्य प्रतिपाद्य रहा हैं।

इस प्रकार उपर विवेचित सभी कहानियों में विद्वानों द्वारा स्वीकृत कहानी के तत्त्वों का सुंदर निर्वाह हुआ है।

निष्कर्ष :- विवेच्य कहानियों का तात्त्विक विवेचन विद्वानों द्वारा स्वीकृत कहानी के तत्त्वों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

विवेच्य कहानियाँ विद्वानों द्वारा स्वीकृत कहानी के तत्त्वों पर खरी उतरती है। विवेच्य कहानियों की कथावस्तु स्वाभाविक, रोचक, नाटकीय और प्रभावशाली, कौतूहल जगानेवाली, जिज्ञासा निर्माण करनेवाली है। सुगठित चरित्रांकन गत्यात्मक घटनाएँ कथावस्तु को प्रवाहमयी बना देती है। विवेच्य कहानीकारों ने अपनी कहानियों में आदिवासी, देहात, नगर, महानगर, विदेशी घटना प्रसंग, अंचल कथांशों को चुनकर कहानियों क वर्ण्य विषय बनाये हैं।

विवेच्य कहानी में पात्रों की संख्या सीमित है। विवेच्य कहानियों के कुछ प्रमुख पात्रों के नामकरण कहानीकारों ने नहीं किए। पात्र अपने मनोभावों को व्यक्त करते हैं। पात्र कथावस्तु को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुए हैं। पात्र समाज के विभिन्न स्तरों से आए हैं। ये पात्र जीवन में संघर्ष करते हैं। अपने प्रति होनेवाले अन्याय के विरोध में वे किसी के पास शिकायत नहीं करते। विवेच्य कहानियों के गौण पात्र भी कथावस्तु में महत्त्वपूर्ण रहे हैं।

विवेच्य कहानियों के संवाद रोचक हैं, विवेच्य कहानीकारों ने अपने विचार,दर्शन अथवा उद्देश को पाठकों तक पहुँचाने का कार्य किया हैं। विवेच्य कहानियों के संवाद संक्षिप्त, चुस्त दिखाई देते हैं। विवेच्य कहानियों में पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल संवादों का प्रयोग हुआ है। जिससे कहानियाँ सुंदर बन पडी है। विवेच्य

कहानियों में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया गया हैं। वे शब्द अर्थ-बोध में बाधा नहीं बनते। इसके साथ-साथ उर्दू, फारसी, अरबी, भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ हैं। वे शब्द भी अर्थबोध में बाधा नहीं बनते। बंगाली भाषा के वाक्यांशों का प्रयोग एक कहानी में हुआ है, वे वाक्यांश लेखक ने बंगाली भाषा के वाक्यांशों का कोष्ठक में अर्थ दिए है, जिससे अर्थ बोध में बाधा नहीं आती। विवेच्य कुछ कहानियों के शीर्षक लघु, चुस्त, आकर्षक है। एक ,दो कहानियों के शीर्षक लंबे चौड़े हैं। तो कुछ शीर्षक सारगर्भित है, विषयानुकूल है। कुछ कहानियों के शीर्षक नायिकाओं के नामपर है।

विवेच्य कहानियों के उद्देश में कहानीकारों ने सफलता प्राप्त की हैं। जिस लक्ष्य को लेकर कहानीकारों ने कहानियाँ लिखी है। उस लक्ष्य तक कहानीकार पहुँचने में सफल रहे हैं। कहानीकारों ने अपने विचार , मत, दर्शन, पात्रों के माध्यम से, घटनाओं के माध्यम से, समाज के सामने रखने की कोशिश की है।

संदर्भ ग्रंथ

१.	डॉ. रामेश्वरलाल खंडेलवाल - जयशंकर प्रसाद : वस्तु औरकला	पृ- ३६
२.	डॉ. माधव सोनटक्के - हिंदी भाषा तथा साहित्य शास्त्र	११८,e
३.	(प्रधान सं), धीरेंद्र वर्मा - हिंदी साहित्य कोश	पृ- २११
४.	चंद्रभानु मिश्र - जयशंकर प्रसाद की कहानी कला	पृ -४२
५.	सं. धीरेंद्र वर्मा - हिंदी विश्वकोश भाग क्र. २	पृ- ४०७
६.	सं. धीरेंद्र वर्मा - हिंदी विश्वकोश भाग २	पृ- १६८
७.	डॉ. भगीरथ मिश्र - काव्यशास्त्र	पृ- ९३
८.	मालती जोशी-प्रसाद की कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन	पृ - ६
९.	'नया ज्ञानोदय, फरवरी २००३,' राकेश कुमार सिंह -'अरण्य रात्रि की महक '	पृ- ८१
१०.	वही वही वही वही	पृ - ७७
११.	वही वही चंद्रिका ठाकुर 'देशदीप'- पापिन पाँखी	पृ - ८७
१२.	वही वही वही वही	पृ - ८३
१३.	वही मार्च-अप्रैल २००३, राजी सेठ - 'दलदल '	पृ - २०
१४.	वही वही वही वही	पृ - २५
१५.	वही वही शिवकुमार यादव 'कई-कई शक्लोंवाले प्रेत '	पृ - ७३
१६.	वही वही वही वही	पृ - ७३
१७.	वही वही ए. असफल - 'प्रत्याशा '	पृ - ८९
१८.	वही वही वही वही	पृ - ८५
१९.	वही वही वही वही	पृ - ८६
२०.	'नया ज्ञानोदय,' मई २००३, दिनेश पाठक - 'पारुल दी '	पृ - १०८

२१.	वही वही सुनीता जैन - पाँच दिन	पृ - ५७
२२.	वही वही आनंद बहादुर - 'ढ़ेला '	पृ - ७१
२३.	वही जून, २००३ , राजेंद लहरिया - 'द्वंदव समास : उर्फ कथा एक तिलिस्म ' की	पृ - १९
२४.	वही वही वही वही	पृ - १६
२५.	वही वही वही वही	पृ - १६
२६.	वही वही पुन्नी सिंह 'अंतर्कथा '	पृ = ५८
२७.	वही वही वही वही	पृ - ६३
२८.	वही वही मुशर्रफ आलम जौकी 'मुझे उसे जिंदा रखना है '	पृ - १०६
२९.	वही वही अशोक प्रियदर्शी 'औरत '	पृ - १२०
३०.	वही जुलाई, २००३ मालती जोशी - ' तुम मेरी राखो लाज हरी '	पृ - १७
३१.	वही वही वही वही	पृ - १०
३२.	वही वही वही वही	पृ - ११
३३.	वही वही नरेंद्र नागदेव - 'कुछ कहना है '	पृ - ५६
३४.	वही वही विजय - 'जंगल का सपना '	पृ - १०३
३५.	वही वही वही वही	पृ - ९६
३६.	वही वही वही वही	पृ - ९९
३७.	वही अगस्त, २००३ गोविंद मिश्र - 'तुम हो '	पृ - ३२
३८.	वही वही वही वही	पृ - ३८
३९.	'नया ज्ञानोदय' अगस्त - २००३, अवधेश प्रीत - 'सरपट '	पृ - ४९
४०.	वही वही नफीस आफरीदी - 'घर पहाड़ होता है '	पृ - ८३
४१.	वही वही वही वही	पृ - ७९
४२.	वही वही संतोष दीक्षित - 'उसकी वह अंतिम रेल यात्रा'	पृ - १११

४३.	वही वही वही वही	पृ - १०८
४४.	वही सितंबर - २००३ मृदुला गर्ग - 'वह दूसरी '	पृ - ४०
४५.	वही वही वही वही	पृ - ३४
४६.	वही वही अजित हर्षे - 'प्रेम, सपना और मृत्यु '	पृ - ८०-८१
४७.	वही वही वही वही	पृ - ८०
४८.	वही वही वही वही	पृ - ८०
४९.	वही वही उषा राजे सक्सेना - 'मेरे अपने '	पृ - ९९
५०.	वही वही वही वही	पृ - ९८
५१.	वही वही राजेश जैन - 'मन मोबाईल '	पृ - १०१
५२.	वही वही वही वही	पृ - १००
५३.	वही अक्टूबर,२००३ चंद्रकांता - 'रात में सागर '	पृ - २३
५४.	वही वही वही वही	पृ - २२
५५.	वही वही तरुण भटनागर - 'धूल की एक परत '	पृ - ४९
५६.	वही वही वही वही	पृ - ४३, ४४
५७.	वही वही कृष्ण बिहारी - 'धोबी का कुत्ता '	पृ - ८१
५८.	'नया ज्ञानोदय, ' नवंबर, २००३ चित्रा मुद्गल - 'शहर '	पृ - ६७
५९.	वही वही वही वही	पृ - ६६
६०.	वही वही उर्मिला शिरीष - 'सहसा एक बूँद उछली '	पृ - ३५
६१.	वही वही सेराज खान 'बातिश' - एक चिड़िया का शोकगीत	पृ - १०४
६२.	वही वही वही वही	पृ - १०७
६३.	वही वही वही वही	पृ - १०५
६४.	वही दिसंबर, २००३ जयशंकर - 'भुरमुंड़ा'	पृ - २८
६५.	वही वही वही वही	पृ - २४

६६.	वही वही रमा सिंह - 'ग्रहण '	पृ - ३५
६७.	वही वही वही वही	पृ - ३६
६८.	वही वही वही वही	पृ - ३२
६९.	वही वही जयनंदन 'अपदस्थ'	पृ - ८७
७०.	वही वही वही वही	पृ - ९४
७१.	वही वही हीरालाल नागर - 'ड़ेक पर अंधरा '	पृ - ९९
७२.	वही वही वही वही	पृ - १०६